* 20th Year
* Issue: 103
* 12.08.2026 (WEDNESDAY)
* ROURKELA
* R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
* (Pages-6)
* Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

हर घर तिरंगा, हर मन तिरंगा... स्वतंत्रता सेनानियों को दें श्रद्धांजलि, पीएम मोदी ने इंस्टाग्राम पर की अपील

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को नागरिकों से हर घर तिरंगा अभियान में शामिल होने और स्वतंत्रता दिवस से पहले इसे हर घर में एक उत्सव की तरह मनाने का आग्रह किया। मोदी ने इंस्टाग्राम पर इस कैंपेन से जुड़ा एक वीडियो शेयर करते हुए कहा, आइए, हर घर तिरंगा को हर घर में एक उत्सव बनाएं। यह 15 अगस्त को होने वाले 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले हुआ। इससे पहले संसद भवन परिसर में मंगलवार को सज़ारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की साप्ताहिक संसदीय दल की बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पहुंचने पर राजग सांसदों ने तिरंगा लहराकर तथा 'वंदे मातरज़' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाकर उनका स्वागत किया। संसद भवन पुस्तकालय स्थित जीएमसी बालयोगी सभागार में आयोजित इस 'मंगल मिलन'

बैठक में केंद्रीय मंत्रियों, राजग नेताओं और गठबंधन में शामिल दलों के सांसदों ने हिस्सा लिया। बैठक में जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने जल शक्ति मंत्रालय के विभिन्न कार्यों पर एक प्रस्तुति भी दी। प्रधानमंत्री के सभागार में पहुंचते ही मंत्रियों और सांसदों ने राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए उनका अभिनंदन किया तथा 'वंदे मातरज़' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाए। बैठक में भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन, केंद्रीय मंत्री अमित शाह, निर्मला सीतारमण, नितिन गडकरी, शिवराज सिंह चौहान, एस जयशंकर सहित कई वरिष्ठ नेता शामिल हुए।

राजग के घटक दलों के नेताओं में जद(एस) के एचडी कुमारस्वामी, तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) के किंजरापु राम मोहन नायडू, आरपीआई (ए) के रामदास आठवले, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के प्रफुल्ल पटेल, राष्ट्रीय लोक मोर्चा के उपेंद्र कुशवाहा और एनसीपीआई की शताज़्दी रॉय सहित अन्य मंत्री भी बैठक में मौजूद रहे। संसद सत्र के दौरान हर मंगलवार को राजग संसदीय दल की बैठक आयोजित की जाती है। संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई को शुरू हुआ था और 13 अगस्त को संपन्न होगा। बैठक के तुरंत बाद, राजग सांसदों ने संसद के मकर द्वार के बाहर विरोध प्रदर्शन किया, जहां उनका आमना-सामना विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के सांसदों से हुआ, जो विरोध-प्रदर्शन कर रहे थे।

एक ओर, जहां सज़ारूढ़ गठबंधन के सांसदों ने झारखंड में प्रतियोगी परीक्षाओं के अज़्यर्थियों पर पुलिस की ''बर्बर'' कार्रवाई और देश के अलग-अलग हिस्सों में छात्रों के विरोध-प्रदर्शन के मुद्दे पर संसद में चर्चा से कांग्रेस नेता राहुल गांधी के कथित तौर पर ''भागने'' का विरोध करते हुए नारे लगाए। वहीं दूसरी ओर, विपक्षी दलों के सांसद अयोध्या के राम मंदिर से कथित चढ़ावा चोरी पर संसद में चर्चा और प्रश्नपत्र लीक को लेकर दिल्ली में 20 जुलाई को प्रदर्शनकारी छात्रों पर पुलिस के कथित बल प्रयोग को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री के बयान की मांग कर रहे थे।

वंदे मातरम बिल बना कानून, राष्ट्रपति मुर्मू ने दी मंजूरी, राष्ट्रगान जैसा ही अब होगा सम्मान

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मंगलवार को वंदे मातरम बिल को मंज़ूरी दे दी, जिससे राष्ट्रीय गीत को भी राष्ट्रीय गान के समान कानूनी संरक्षण मिल गया है। संसद ने पिछले महीने %राष्ट्रीय सज़्मान के अपमान की रोकथाम (संशोधन) विधेयक, 2026 पास किया, जिसमें राष्ट्रीय सज़्मान के अपमान की रोकथाम अधिनियम, 1971 में संशोधन किया गया। इस कानून का मकसद वंदे मातरम को भी राष्ट्रीय गान जन गण मन जैसी ही कानूनी सुरक्षा देना है।

राष्ट्रपति की मंज़ूरी मिलने के बाद यह विधेयक अब कानून बन गया है। अब ऐसे अपराधों के लिए तीन साल तक की जेल, जुर्माना या दोनों सज़ा हो सकती है। इससे पहले, राष्ट्रीय सज़्मान के अपमान की रोकथाम अधिनियम% के तहत राष्ट्रीय गान (जन गण मन) को गाने से जानबूझकर रोकना या इसे गाते समय किसी सभा में बाधा डालना मना था। इन अपराधों के लिए तीन साल तक की जेल, जुर्माना या दोनों सज़ा का प्रावधान था, जबकि दूसरी बार और उसके बाद हर बार दोषी पाए जाने पर कम से कम एक साल की जेल की सज़ा होती थी। पुराने कानून में राष्ट्रीय गीत के लिए वैसी सुरक्षा नहीं थी। बिल में कहा गया है कि अभी वंदे मातरम के गायन के अपमान को रोकने के लिए कोई खास कानूनी प्रावधान नहीं है, जबकि इसे राष्ट्रीय गीत का सज़्मान प्राप्त है। इसलिए, किसी व्यक्ति को राष्ट्रीय गीत गाने से जानबूझकर रोकने या ऐसे गायन में लगी किसी सभा में बाधा डालने से रोकने के लिए, उक्त अधिनियम की धारा 3 में संशोधन करके राष्ट्रीय गीत को भी इसके दायरे में लाने का प्रस्ताव है, ताकि ऐसे कार्यों को दंडनीय बनाया जा सके। बिल में आगे कहा गया है कि संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 24 जनवरी, 1950 को कहा था कि बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित गीत वंदे मातरम - जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी - को राष्ट्रीय गान जन गण मन के समान ही सज़्मान दिया जाएगा और उसे उसके बराबर का दर्जा प्राप्त होगा।

झारखंड में अभाविप कार्यकर्ताओं की रांची में पुलिस से झड़प, विस अनिश्चित काल के लिए स्थगित

रांची ११/०८ (संवाददाता): झारखंड में भर्ती परीक्षाओं में कथित गड़बड़ियों को लेकर छात्रों और नौकरी के उज़्मीदवारों का आंदोलन मंगलवार को 18वें दिन में प्रवेश कर गया। इस दौरान अभाविप ने राज्यव्यापी बंद का आह्वान किया और अभाविप ने राज्य विधानसभा तक मार्च करने की योजना बनाई। अभाविप ने सोमवार को विधानसभा की ओर मार्च कर रहे प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई के विरोध में सुबह 8 बजे से आधी रात तक बंद का आह्वान किया। अभाविप ने कहा कि वह पुरानी विधानसभा परिसर से नए परिसर तक %विधानसभा मार्च निकालेगा। पुलिस ने बताया कि मंगलवार को झारखंड विधानसभा की ओर मार्च कर रहे अभाविप के 110 सदस्यों को हिरासत में ले लिया गया। ये सदस्य राज्य में भर्ती परीक्षाओं

में कथित गड़बड़ियों को लेकर प्रदर्शन कर रहे छात्रों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई का विरोध कर रहे थे।

एक अधिकारी ने बताया कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के सदस्यों ने रांची के पुराने विधानसभा इलाके से अपना जुलूस शुरू किया, तभी उन्हें हिरासत में ले लिया गया। इस बीच, अभाविप कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच झड़प हो गई, ज़्योंकि प्रदर्शनकारियों ने हिरासत में लिए गए कार्यकर्ताओं को ले जा रही बस को आगे बढ़ने से रोक दिया। मार्च के दौरान पुलिस ने कुछ महिला प्रदर्शनकारियों को भी हिरासत में लिया। विरोध प्रदर्शन के दौरान दो छात्र, जिनमें एक लड़की भी शामिल थी, बेहोश हो गए। सुरक्षाकर्मी उस लड़की को पास की एक सुरक्षित जगह पर ले गए, जहाँ साथ में प्रदर्शन कर रहे लोगों ने उसे पानी पिलाया। अभाविपने छात्रों के ख़िलाफ़ पुलिस की कथित ज्यादतियों को लेकर सरकार से जवाब माँगा। अभाविप कार्यकर्ता कुमार दिव्यांशु ने कहा कि सरकार युवाओं और छात्रों की आवाज़ दबाने की कोशिश कर रही है।

मंगल मिलन में एनडीए सांसदों ने पीएम मोदी का तिरंगे के साथ किया स्वागत

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): मंगलवार को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संसद में सज़ाधारी गठबंधन की साप्ताहिक संसदीय दल की बैठक के लिए पहुँचे, तो हृष्ठ सांसदों ने राष्ट्रीय ध्वज के साथ और %वंदे मातरम% व %भारत माता की जय% के नारों के साथ उनका स्वागत किया। %मंगल मिलन% नाम की यह बैठक संसद पुस्तकालय के तस्ष्ट बालयोगी ऑडिटोरियम में आयोजित की गई थी, जिसमें केंद्रीय मंत्री, हृष्ठ नेता और सहयोगी दलों के सांसद शामिल हुए। वहाँ मौजूद लोगों में बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन और केंद्रीय मंत्री अमित शाह, निर्मला सीतारमण, नितिन गडकरी, शिवराज सिंह चौहान और एस जयशंकर शामिल थे। हृष्ठ सहयोगियों का प्रतिनिधित्व करने वाले मंत्रियों में छ्ष्ठ(स्) के एचडी कुमारस्वामी, ञ्ष्ठक्क के किंजरापु राम मोहन नायडू, ऋस्क्त् के रामदास बंडू अठावले, हृष्टक्क के प्रफुल्ल पटेल, ऋरू के उपेंद्र कुशवाहा और हृष्टक्क्व की शताज़्दी रॉय शामिल थे। संसद सत्र के दौरान हर मंगलवार को हृष्ठ संसदीय दल की बैठक होती है। 20 जुलाई को शुरू हुआ मॉनसून सत्र 13 अगस्त को खत्म होने वाला है।

राहुल गांधी देशद्रोही शक्तियों के हाथ आ चुके हैं-कंगना रनौत

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): कंगना रनौत ने संसद के बाहर हृष्ठ के दूसरे सांसदों के साथ विरोध मार्च में शामिल होकर राहुल गांधी की आलोचना की। यह मार्च संसद लाइब्रेरी से मकर द्वार की ओर निकाला गया। इस एज़्टर-नेता ने विपक्ष पर बार-बार संसद की कार्यवाही में बाधा डालने का आरोप लगाया और विपक्ष के नेता से उठाए जा रहे मुद्दों पर जवाब देने को कहा। न्यूज़ एजेंसी-हृद्ध से बात करते हुए कंगना ने आरोप लगाया कि विपक्ष ने इस मुद्दे पर बहस की मांग करने के बावजूद इस मामले पर चर्चा करने से इनकार कर दिया।

कंगना ने कहा कि उन्होंने इस मुद्दे पर बात करने से इनकार कर दिया है। पहले उन्होंने कहा था कि वे कॉकरोच वाले विरोध प्रदर्शन पर बात करना चाहते हैं। लेकिन जब उनका स्वागत किया गया, तो उन्होंने इस मुद्दे पर बात करने

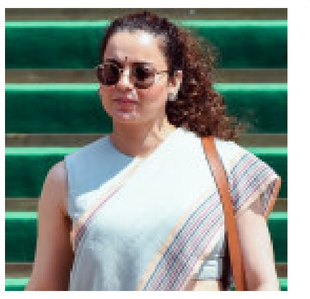

से मना कर दिया। उन्होंने विपक्ष पर जनता को गुमराह करने का आरोप लगाते हुए कहा कि आप देख सकते हैं कि वे आपके देश को कितना धोखा दे रहे हैं। वे संसद को एक दिन भी नहीं चलने दे रहे हैं। कंगना ने कहा कि पहले तो उन्होंने (विपक्ष ने) चर्चा कराने के लिए इतना हंगामा किया। अब जब चर्चा होने जा रही है, तो वे उससे भाग रहे हैं।

वे अमित शाह जी की बात नहीं सुनना चाहते। ऐसे में सदन कैसे चलेगा? देश देख रहा है कि वे किस तरह देश-विरोधी ताकतों के हाथों में पड़ गए हैं। यह शर्म की बात है कि उन्होंने इस दौरान सदन को एक दिन भी नहीं चलने दिया। विरोध मार्च के दौरान, कंगना को एक तज़्ती पकड़े हुए देखा गया, जिस पर लिखा था, झारखंड में छात्रों पर हुई हिंसा पर राहुल गांधी जवाब दो! एनडीए सांसदों ने राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए नारे भी लगाए, जिनमें राहुल गांधी जवाब दो और राहुल गांधी भागो मत शामिल हैं। सोमवार को सरकार ने घोषणा की थी कि गृह मंत्री शाह देश के अलग-अलग हिस्सों में छात्रों के विरोध प्रदर्शन पर बहस करेंगे। हालांकि, गांधी ने कहा कि देश संसद में आम विषयों पर शाह की राय जानने में दिलचस्पी नहीं रखता है, बल्कि यह जानना चाहता है कि ज़्या उन्होंने विरोध कर रहे छात्रों पर पैलेट गन चलाने का आदेश दिया था। बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने कहा कि गांधी की सोच दुनिया के सामने आ गई है। उन्होंने दावा किया कि झारखंड में भूख हड़ताल पर बैठे देवेंद्र नाथ महतो के साथ राज्य में मारपीट की गई।

एफसीआरए संशोधन बिल जेपीसी को भेजेगी सरकार? विपक्ष के विरोध के बीच बड़ा संकेत

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): मंगलवार को सूत्रों ने बताया कि सरकार विदेशी योगदान (विनियमन) संशोधन विधेयक, 2026% (एफसीआरए) को विस्तृत जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति) के पास भेज सकती है। गौरतलब है कि इस विधेयक का मकसद एक तय अथॉरिटी के ज़रिए विदेशी योगदान और संपज़ियों की निगरानी, प्रबंधन और निपटान के लिए एक व्यापक ढांचा तैयार करना है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाक़ात के बाद मिज़ोरम के मुज़्यमंत्री लालदुहोमा ने कहा कि एफसीआरए बिल पर 12 अगस्त को संसद में चर्चा और उसे पास करने की प्रक्रिया होगी, और इसे पिछली तारीख से लागू नहीं किया जाएगा।

लालदुहोमा, मिज़ोरम के चर्च नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ शाह से मिले ताकि प्रस्तावित कानून के बारे में अपनी चिंताएं बता सकें। इस कानून का मकसद विदेशी फंडिंग पाने वाले संगठनों पर निगरानी बढ़ाना है; इसके तहत एक मज़बूत अथॉरिटी बनाई जाएगी जो उन हत्नह की संपज़ि को अपने नियंत्रण में ले सकेगी जिनका स्नष्टक्र लाइसेंस रद्द हो गया है। लालदुहोमा ने संसद भवन परिसर में पत्रकारों से कहा कि हमने नए स्नष्टक्र बिल को लेकर अपनी चिंताएं गृह मंत्री के सामने रखीं। उन्होंने हमें भरोसा दिलाया कि यह बिल पिछली तारीख से लागू नहीं होगा। कानून के समय-सीमा के बारे में पूछे जाने पर मुज़्यमंत्री ने बताया कि शाह ने प्रतिनिधिमंडल को जानकारी दी कि 12 अगस्त को संसद में इस बिल पर बहस होगी। यह प्रस्तावित कानून 25 मार्च को लोकसभा में पेश किया गया था। फॉरेन कंट्रीज़्यूशन (रेगुलेशन) अमेंडमेंट बिल, 2026 सरकार को एक डेज़िग्नेटेड अथॉरिटी बनाने का अधिकार देता है। यह अथॉरिटी विदेशी योगदान और उससे बनाई गई संपज़ियों का मैनेजमेंट संभालेगी, जब किसी संगठन का स्नष्टक्ररजिस्ट्रेशन रद्द हो जाए, सरेंडर कर दिया जाए या रिन्यू न होने की वजह से खत्म हो जाए। बिल में यह भी कहा गया है कि अगर संपज़ि कोई पूजा स्थल है, तो अथॉरिटी को यह पक्का करना होगा कि उसका धार्मिक स्वरूप बना रहे।

प. बंगाल वोटर लिस्ट से नाम हटाने पर सुको सख्त, ईसीआई से मांगा एसआईआर ट्रिब्यूनल का डिस्पोजल

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): सुप्रीम कोर्ट ने भारत के चुनाव आयोग (श्वष्ट्ठ) को निर्देश दिया कि वह पश्चिम बंगाल में %स्पेशल इंटेंसिव रिविजन% (स्ढ्ढक्र) प्रक्रिया के दौरान वोटर लिस्ट से नाम हटाने के खिलाफ दायर अपीलों पर ट्रिज़्यूनल द्वारा किए गए फैसलों का विवरण रिकॉर्ड पर रखे। चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची और वी. मोहना की बेंच कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। इस याचिका में मांग की गई थी कि वोटर लिस्ट से नाम हटाने के खिलाफ अपीलों का तेज़ी से निपटारा करने के लिए पश्चिम बंगाल के हर ज़्लॉक में स्ढ्ढक्र ट्रिज़्यूनल बनाए जाएं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह बुनियादी

ढांचे और मामलों के निपटारे के लिए समय-सीमा तय करने जैसी अन्य चिंताओं पर विचार करने से पहले, मौजूदा ट्रिज़्यूनल द्वारा संभाले और निपटाए जा रहे मामलों की संज़्या का आकलन करना चाहता है। बेंच ने श्वष्ट्ठ से ट्रिज़्यूनल के कामकाज के बारे में खास जानकारी मांगी, जिसमें अभी चल रहे ट्रिज़्यूनल की संज़्या, उनके काम के घंटे और निपटाई गई अपीलों की संज़्या शामिल है। सुनवाई के दौरान, याचिकाकर्ता ने अपील निपटाने के लिए एक समय-सीमा तय करने का निर्देश देने की मांग की। हालांकि, कोर्ट ने कहा कि वह इस चरण में समय-सीमा तय करने की स्थिति में नहीं है।जस्टिस जॉयमाल्य बागची ने कहा, समय-सीमा? वह हम तय नहीं कर सकते; पहले हमें ट्रिज़्यूनल के फैसलों की संज़्या और उनकी सही-गलत होने की जांच करने दें।

बेंच ने संकेत दिया कि निपटान के आंकड़े उसे ट्रिज़्यूनल के काम के बोझ और कामकाज का आकलन करने में मदद करेंगे, ताकि यह तय किया जा सके कि आगे और निर्देश देने की ज़रूरत है या नहीं। एक अन्य याचिकाकर्ता की ओर से पेश हुए सीनियर एडवोकेट विकास रंजन भट्टाचार्य ने भी ट्रिज़्यूनल के लिए उपलज़्ध बुनियादी ढांचे के बारे में चिंता जताई। हालांकि, कोर्ट ने कहा कि बुनियादी ढांचे और कामकाज से जुड़े अन्य मुद्दों पर विचार करने से पहले वह निपटान के आंकड़ों की जांच करेगा। कार्यवाही के दौरान उन लोगों को राशन और अन्य कल्याणकारी लाभ न मिलने के बारे में भी बातें हुईं, जिनके नाम वोटर लिस्ट से हटा दिए गए हैं, जबकि ऐसे हटाने के खिलाफ उनकी अपील अभी भी लंबित है। इस मुद्दे पर, सुप्रीम कोर्ट ने संकेत दिया कि पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा सामाजिक कल्याणकारी लाभ न देने के खिलाफ किसी भी चुनौती को कलकज़ा हाई कोर्ट में ही उठाया जाना चाहिए। कोर्ट ने कहा, अगर पश्चिम बंगाल राज्य सामाजिक लाभ न देने का फैसला करता है, तो यह मामला हाई कोर्ट में जाना चाहिए। बेंच ने आगे स्पष्ट किया कि अगर याचिकाकर्ता मौजूदा कार्यवाही का दायरा बढ़ाकर सामाजिक लाभ न मिलने के मुद्दे को भी शामिल करना चाहता है, तो सही तरीका हाई कोर्ट का रुख करना होगा।

विविध समाचार

सांसद जी आज भाषण नहीं दिए, लगता है दावत...योगी ने रविकिशन पर ली चुटकी

११/०८ (संवाददाता): उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर के सांसद और भोजपुरी स्टार रवि किशन पर मज़ाकिया अंदाज़ में तंज कसा। उन्होंने कहा कि बेहतर हवाई कनेक्टिविटी की वजह से अब कोई यह पता नहीं लगा सकता कि किशन किसी खास दिन गोरखपुर, मुंबई या दिल्ली में हैं। उनकी इस बात पर ज़ोरदार ठहाके लगे। गोरखपुर में बेहतर हवाई कनेक्टिविटी के बारे में बात करते हुए योगी ने कहा कि कनेक्टिविटी में ज़बरदस्त बदलाव आया है। एक दशक पहले जहाँ दिन में सिर्फ़ एक फ़्लाइट चलती थी, वहीं अब शहर से 14 फ़्लाइट्स चल रही हैं। इसके बाद उन्होंने दर्शकों के बीच बैठे किशन की ओर ध्यान दिया मैं रवि किशन के बारे में हमेशा यही कहता हूँ। कोई नहीं बता सकता कि वह कब गोरखपुर में हैं और कब मुंबई में। अगर वह मुंबई में

नाश्ता करते हैं, तो दोपहर का खाना गोरखपुर में खा लेते हैं। और यहाँ बस अपनी झलक दिखाने के बाद, वह दिल्ली भी चले जाते हैं। भाषाके संसाधन

योगी ने हँसी-मज़ाक के बीच कहा कि हवाई कनेक्टिविटी के बिना, ऐसा शेड्यूल बनाए रखना मुश्किल होता। इन बातों पर किशन और उनके आस-पास बैठे लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए दिखे। 70 करोड़ रुपये की लागत से बनी 1.80 किलोमीटर लंबी %ग्रीन सिटी रोड% (जो नेशनल हाईवे-24 को पटनिया होते हुए माधोपुर बांधा से जोड़ती है) के उद्घाटन के दौरान, योगी ने किशन पर फिर से चुटकी ली।

उन्होंने कहा कि उस दिन सांसद ने कोई भाषण नहीं दिया। पता नहीं रवि किशन जी ने आज भाषण क्यों नहीं दिया। लगता है उन्होंने आप सभी को कुछ ज़्यादा ही दावतें खिला दी हैं।

इसके बाद उन्होंने भीड़ से पूछा कि कितने लोगों ने किशन की दावत में हिस्सा लिया है, कितनों ने उनकी फिल्में देखी हैं, और कितनों ने कालीबाड़ी के बाबा फिल्म देखी है। भीड़ की प्रतिक्रिया सुनने के बाद, योगी ने हंसते हुए कहा कि यह दोनों के बीच बराबरी का मामला है। दोनों के बीच एक ऐसा सार्वजनिक तालमेल है जिससे कई बार ऐसे पल सामने आए हैं जो सोशल मीडिया पर वायरल हुए हैं और यह योगी की आम तौर पर सख़्त सार्वजनिक छवि से बिल्कुल अलग है। जुलाई 2025 में गोरखपुर नगर निगम के एक कार्यक्रम में, योगी ने रामगढ़ ताल इलाके में नाले के ऊपर घर बनाने के लिए किशन की खिंचाई की। उन्होंने मज़ाक-मज़ाक में चेतावनी दी कि अगर जलभराव हुआ, तो उनके खिलाफ भी कार्रवाई पक्की है, और साथ ही सलाह दी कि सीवेज के सुचारू बहाव के लिए नाले से कुछ दूरी पर घर बनाना चाहिए। एक और मौके पर, उसी घर का ज़िक्र करते हुए योगी ने मज़ाक में कहा कि रामगढ़ ताल के किनारे एक शीश महल (कांच का महल) बना हुआ है जो साफ तौर पर किशन के घर की ओर इशारा था।

झारखंड में छात्रों का विरोध प्रदर्शन जारी, सरकार से वार्ता रहा बेनतीजा

रांची ११/०८ (संवाददाता): मंगलवार को रांची में कई जगहों पर ख्क्क कार्यकर्ताओं ने टायर जलाए और सड़कें जाम कर दीं। पार्टी ने एक दिन पहले राज्य विधानसभा की ओर मार्च कर रहे छात्रों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई के विरोध में राज्यव्यापी बंद बुलाया था। जब प्रदर्शनकारी पुरानी विधानसभा बिल्डिंग से नई विधानसभा परिसर की ओर मार्च करने की कोशिश कर रहे थे, तो पुलिस ने कई प्रदर्शनकारियों को हिरासत में भी ले लिया। पुलिस के मुताबिक, ख्क्क कार्यकर्ताओं ने कांके रोड पर ष्टख्क्क्ष्ठ गेट के पास और किशोरगंज, अरगोरा और कांके इलाकों में सड़कें जाम कर दीं। वहीं, न्यूक्लियस मॉल, हरमू चौक और किशोरगंज चौक के पास टायर जलाए गए, जिससे ट्रैफिक बाधित हुआ और आम जनजीवन पर असर पड़ा। विरोध प्रदर्शन वाली जगहों के दृश्यों में पुलिसकर्मियों और ख्क्क कार्यकर्ताओं के बीच मामूली झड़प भी दिखाई दी। जैसे-जैसे बंद का असर बढ़ा, पुलिस ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ख्क्क) के कार्यकर्ताओं को पुरानी विधानसभा बिल्डिंग से नई विधानसभा परिसर तक उनके

तय मार्च के दौरान हिरासत में ले लिया। जब पुलिस उन्हें बसों में ले जाने की कोशिश कर रही थी, तो प्रदर्शनकारी ज़मीन पर बैठ गए और नारेबाज़ी करने लगे; इसके बाद पुलिस ने उन्हें घेर लिया और पुलिस वैन में ले गई झारखंड के रामगढ़ ज़िले में, ख्क्क कार्यकर्ताओं ने रांची-पटना हाईवे (ह॥-33) को जाम कर दिया। सुबह-सुबह सैकड़ों ख्क्क कार्यकर्ता चार-लेन वाले हाईवे पर जमा हुए, सड़क पर बैठ गए और हेमंत सोरेन की सरकार के ख़िलाफ़ नारेबाज़ी की। 25 जुलाई से विरोध कर रहे छात्र भर्ती परीक्षाओं में पारदर्शिता, झारखंड लोक सेवा आयोग (छ्क्स्ट) और झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (छ्स्स्ट) में सुधार, कुछ परीक्षाओं को रद्द करने और ष्टख्ढ्ढ या राज्य के बाहर के रिटायर्ड हाई कोर्ट जजों के पैनल से स्वतंत्र जांच की मांग कर रहे हैं। सामाजिकमुद्दे और हिमायत छह प्रदर्शनकारी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर भी हैं, जिनमें से दो को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रविवार को छ्क्स्ट-छ्स्स्ट मंच के तहत झारखंड सरकार और विरोध कर रहे छात्रों के बीच बातचीत का छठा दौर भी बेनतीजा रहा; दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर इस मुद्दे को सुलझाने में गंभीरता न दिखाने का आरोप लगाया। सरकारी पैनल ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अधिकारियों द्वारा 卐उनकी 98 प्रतिशत मांगें卐 मान लेने के बावजूद छात्रों ने अपना आंदोलन जारी रखा। प्रदर्शनकारियों ने इस दावे को खारिज कर दिया और अपनी मांगें बनाए रखीं।

राहुल गांधी भागें नहीं, झारखंड बर्बरता पर दें जवाब-भाजपा का संसद में प्रदर्शन

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): मंगलवार को ख्ष्ठ सांसदों ने संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष पर आरोप लगाया कि वे सदन की कार्यवाही में बाधा डाल रहे हैं और झारखंड तथा जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे छात्रों के खिलाफ कथित पुलिस कार्रवाई पर बहस से बच रहे हैं। मानसून सत्र के दौरान जारी हंगामे के बीच, विपक्ष ने 20 जुलाई को हुए विरोध प्रदर्शनों पर पुलिस की कार्रवाई को लेकर गृह मंत्री अमित शाह से बयान की मांग की है। इसके जवाब में, बीजेपी सांसद मनोज तिवारी ने विपक्ष के नेता राहुल गांधी से संसद में बने रहने और बर्बरता के आरोपों का जवाब देने को कहा। प्रदर्शन के दौरान पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि अमित शाह जी जवाब देंगे। राहुल गांधी, भागिए मत। राहुल गांधी, आपको शर्म आनी चाहिए। झारखंड में छात्रों के

साथ हुई बर्बरता पर जवाब दीजिए। भाजपा सांसदों ने पोस्टर दिखाकर राहुल गांधी से झारखंड में छात्रों पर हुए कथित लाठीचार्ज के बारे में जवाब मांगा। सांसद जगदंबिका पाल ने विपक्ष की चुप्पी की आलोचना करते हुए कहा कि जिस तरह से पुलिस ने झारखंड में लाठीचार्ज किया और वॉटर कैनन का इस्तेमाल किया, उस पर आज वे चुप क्यों हैं? यहाँ अफरातफरी मची है। आज अपनी चुप्पी से वे देश के सामने बेनकाब हो रहे हैं। भाजपा सांसद अपराजिता सारंगी ने भी राहुल गांधी की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए कहा कि जब झारखंड में छात्रों पर लाठीचार्ज होता है, तो राहुल गांधी चुप रहते हैं। उनकी चुप्पी के पीछे क्या वजह है? हम उनसे जवाब की मांग करते हैं। ने कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों पर सदन को बंधक बनाने और किसी भी तरह की चर्चा न होने देने का आरोप लगाया। केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने बहस के लिए सरकार की तत्परता बताते हुए कहा कि यह संसद का बहुत महत्वपूर्ण सत्र है और सरकार लगातार कह रही है कि वह चर्चा के लिए तैयार है। सरकार ने पेपर लीक से निपटने के लिए एक नया सख़्त कानून बनाया है। केंद्रीय गृह मंत्री भी सदन में बोलने के लिए तैयार हैं, लेकिन उनका (विपक्ष का) एकमात्र मकसद हंगामा करना है। बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर ने झारखंड के युवाओं के साथ हुए बर्ताव की निंदा की और इसे राहुल गांधी की सोच से जोड़ा। उन्होंने कहा कि जिस तरह से उन पर लाठीचार्ज किया गया और ज़्यादतियां की गईं, उससे राहुल गांधी की सोच का पता चलता है ङ्क यह दिखाता है कि उनके समर्थकों की सरकार वाले राज्य में युवाओं के साथ कैसा बुरा बर्ताव हो रहा है और उन्हें न्याय से कैसे वंचित रखा जा रहा है। फिर भी, दूसरी तरफ़, वे खुद तो सदन में आते नहीं हैं, लेकिन गृह मंत्री से जवाब मांगते हैं। गृह मंत्री जवाब देने के लिए तैयार हैं, लेकिन राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी सिर्फ़ सुर्खियों में बने रहने के लिए झूठ फैला रहे हैं और गैर-ज़िम्मेदाराना बयान दे रहे हैं।

झारखंड विस में घमासासन, हेमंत बोले- भाजपा कर रही छात्र आंदोलन से राजनीति

रांची ११/०८ (संवाददाता): झारखंड में छ्क्स्ट और छ्स्स्ट भर्ती परीक्षाओं को लेकर चल रहे छात्रों के विरोध के बीच, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने मंगलवार को विधानसभा में सरकार का रुख स्पष्ट किया। उन्होंने 14वीं झारखंड लोक सेवा आयोग (छ्क्स्ट) प्रारंभिक परीक्षा और बैकलॉग परीक्षाओं को रद्द करने की सरकार की तैयारी की बात कही। उन्होंने यह भी घोषणा की कि छ्क्स्ट परीक्षाएं आयोजित करने वाली एजेंसी ञ्जष्ठक्क से जुड़ी परीक्षाओं की जांच की जाएगी, और भर्ती परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए ढ्ढञ्ज और ढ्ढरू जैसे प्रमुख संस्थानों के विशेषज्ञों से सलाह ली जाएगी।

सोरेन ने कहा कि हमने सदन को चलाने की पूरी कोशिश की, आपने देखा कि सदन में नोट उछाले और दिखाए गए। ये वही नोट हैं जो यहां उनकी (ख्क्क) मौजूदगी और उनकी राजनीति का आधार हैं। आप सभी जानते हैं कि जब से ख्क्क सज़ा में आई है, गरीबों, ज़रूरतमंदों और आप जैसे युवाओं की जेब से पैसा कैसे निकाला जा रहा है। आज आपने देख लिया कि वह पैसा असल

में कहां जा रहा है। उन्होंने कहा कि युवाओं के भविष्य को लेकर राज्य सरकार जिस संकल्प के साथ काम कर रही है, वह आप सभी के सामने है। वहीं दूसरी ओर, केंद्र सरकार की नीतियों की वजह से लाखों छात्र अपनी नौकरी और रोज़गार खो रहे हैं; छोटे, मध्यम और बड़े कारोबार बंद हो रहे हैं। तो, रोज़गार कहां से आएगा? मुख्यमंत्री ने कहा कि हालांकि, आप देखेंगे कि इन सभी परीक्षाओं में चुने गए 75त्न से 100त्न उम्मीदवार इसी क्षेत्र के मूल निवासी हैं... यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि ख्क्क के कार्यकाल में दूसरे राज्यों के लोगों ने यहां बड़े पैमाने पर नौकरियां हासिल की हैं। विपक्ष के हर सवाल का हमारे पास जवाब है, लेकिन उनकी महत्वाकांक्षाएं बहुत बड़ी हैं। हालात ऐसे हैं कि उनके लिए सच का सामना करना बहुत मुश्किल हो गया है। इसी बेचैनी का नतीजा है कि आज सदन को समय से पहले स्थगित करना पड़ा—या कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा। राजनीति

विधानसभा में अपने संबोधन के दौरान, मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि वे छात्र आंदोलन से राजनीतिक फ़ायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी नेता छात्र सक्रियता की आड़ में अपने राजनीतिक हित साधने और युवा उम्मीदवारों को गुमराह करने का काम कर रहे हैं। सोरेन के अनुसार, विपक्ष छात्रों की चिंताओं का उचित समाधान करने में सहयोग करने के बजाय उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा था।

नई संसद, पीएम हाउस, तो फिर क्यों नहीं...15 अगस्त से कॉकरोच जनता पार्टी पूरे देश में छेड़ेगी नया आंदोलन, दिपके का ऐलान

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): कॉकरोच जनता पार्टी (ष्टछ्क्क) के संस्थापक अभिजीत दिपके ने सोमवार को गांवों में सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए एक देशव्यापी अभियान की घोषणा की। उन्होंने गांव के मुखियाओं और अभिभावकों से बच्चों के लिए %बुनियादी% सुविधाओं को बेहतर बनाने की सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी उठाने का आह्वान किया। दिपके ने लोगों से अपील की कि वे 15 अगस्त को - जो भारत का 80वां स्वतंत्रता दिवस है, इस मकसद के लिए संकल्प लें। अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक वीडियो संदेश में, दिपके ने कहा कि पिछले 80 सालों से गांवों के सरकारी स्कूलों को नज़रअंदाज़ और अनदेखा किया गया है और

आरोप लगाया कि उन पर कोई काम नहीं हुआ है। दिपके ने सवाल किया कि हमने नया संसद भवन और प्रधानमंत्री का नया आवास तो बना लिया, लेकिन अपने गांवों में नए स्कूल क्यों नहीं बना सके? क्या हम गांवों में रहने वाले किसानों और मज़दूरों के बच्चों को देश का भविष्य नहीं मानते? हमने उन बच्चों के लिए क्या किया है और उन्हें वे सुविधाएं क्यों नहीं दे पाए जो बड़े शहरों के बच्चों को मिलती हैं? सीजेपी के फाउंडर ने कहा कि गाँव के बच्चों को स्कूल जाने के लिए अभी भी लंबी दूरी तय करनी पड़ती है और वहाँ उन्हें पानी या वॉशरूम की सुविधाएँ भी नहीं मिलती हैं। सीजेपी ने आगे कहा छोटी लड़कियों के लिए यह कितना मुश्किल होता होगा। इसलिए, मुझे लगता है कि इस 15 अगस्त को अगर हमें किसी चीज़ पर ध्यान देना चाहिए, तो वह है एक नई शुरुआत करना, और इसकी शुरुआत हमें अपने सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाकर करनी चाहिए। उन्होंने घोषणा की कि वे महाराष्ट्र के मराठवाड़ा इलाके में स्थित अपने गाँव, हिंगोली जाएँगे और वहाँ के सरपंच (गाँव के मुखिया) से सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाने का अनुरोध करेंगे। सीजेपी ने अपना वीडियो देख रहे सभी गाँव के मुखियाओं से भी अपील की कि वे अपने गाँवों में सरकारी स्कूलों की हालत सुधारने में मदद करें।

उन्होंने कहा कि उनके योगदान को ष्टछ्क्क के सोशल मीडिया पर पूरे क्रेडिट और विज़ुअल्स के साथ दिखाया जाएगा। सीजेपी के संस्थापक ने कहा कि एक सरपंच की पहल दूसरे गांवों को भी अपने सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करेगी। डिपके ने माता-पिता से अपने बच्चों के स्कूलों का सोशल ऑडिट करने और यह जांचने का भी आग्रह किया कि क्या वहां बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि देखें कि क्या वहाँ बिजली और पानी की सुविधा है, और क्या वहाँ वॉशरूम हैं? क्या उन्हें मिड-डे मील मिलता है? और अगर ये सुविधाएँ नहीं हैं, तो वीडियो बनाएँ। क्योंकि आपके बच्चों की पढ़ाई-लिखाई अच्छी होनी चाहिए। यह आपके बच्चों का मौलिक अधिकार है। उन्होंने कहा कि ष्टछ्क्क जल्द ही एक फ़ॉर्म जारी करेगा, जिसके ज़रिए माता-पिता अपने बच्चों के स्कूल और वहाँ की सुविधाओं के बारे में जानकारी दे सकेंगे।

आपके नाना ने चीन को कितनी जमीन दी? राहुल गांधी पर गिरिराज का तीखा हमला

नयी दिल्ली ११/०८ (संवाददाता): केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने सोमवार को संसद में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की टिप्पणियों की कड़ी आलोचना करते हुए उनके आचरण को बचकाना व्यवहार बताया और राष्ट्रपति के अभिभाषण के दौरान अनुशासनहीनता का आरोप लगाया। उन्होंने भारत की सशस्त्र सेनाओं को कमजोर करने के प्रयासों का खंडन करने के लिए 1962 के चीन विवाद को भी उठाया। गिरिराज सिंह ने कहा कि राहुल गांधी जिस तरह से अनुशासनहीनता का प्रदर्शन कर रहे हैं, सदन के अंदर अध्यक्ष के आदेशों का पालन करने से भी इनकार कर रहे हैं। आपके नाना ने 1962 में चीन को कितनी जमीन दी थी... लेकिन अभी आपको आज राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा करनी चाहिए। तभी विपक्ष के नेता की गरिमा बनी रहेगी। संह ने कांग्रेस नेता पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को बदनाम करने और सशस्त्र बलों की वीरता को कमतर आंकने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि या तो वे यहां भारत को वैश्विक स्तर पर बदनाम करने और सशस्त्र बलों की वीरता को कमतर आंकने वाली बातें कहने के इरादे से आए हैं।

विविध समाचार

क्या होता है कस्तूरी तिलक? जानें इसे रोजाना लगाने के लाभ

शास्त्रों में कई प्रकार के तिलक का वर्णन मिलता है, जैसे कि चंदन का तिलक, केसर का तिलक, हल्दी का तिलक, श्याम बिंदी आदि। इसी कड़ी में कस्तूरी तिलक का भी उल्लेख किया गया है।

हिन्दू धर्म में तिलक लगाने का विधान है। ऐसा माना जाता है कि तिलक लगाने के पीछे न सिर्फ कई धार्मिक कारण जुड़े हुए हैं बल्कि कई वैज्ञानिक तर्क भी मौजूद हैं। इसके अलावा, तिलक लगाने से कई ज्योतिषीय लाभ भी मिलते हैं। शास्त्रों में कई प्रकार के तिलक का वर्णन मिलता है, जैसे कि चंदन का तिलक, केसर का तिलक, हल्दी का तिलक, श्याम बिंदी आदि। इसी कड़ी में कस्तूरी तिलक का भी उल्लेख किया गया है। हालांकि कस्तूरी तिलक के बारे में बहुत कम ही लोगों को पता होता है। ऐसे में ज्योतिषाचार्य राधाकांत वत्स से आइये जानते हैं कि आखिर क्या होता है कस्तूरी तिलक और क्या हैं इसे लगाने के लाभ।

कस्तूरी तिलक क्या होता है?

हिमालय में मिलने वाले कस्तूरी मृग से बनता है कस्तूरी तिलक। असल में कस्तूरी मृग की नाभि में एक दिव्य द्रव्य होता है जिसमें न सिर्फ कई औषधीय गुण होते हैं बल्कि ज्योतिष दृष्टि में भी इसे बहुत खास माना जाता है। उसी द्रव्य को जब मृग से जब निकाला जाता है तब उससे कस्तूरी चंदन का निर्माण होता है। उस द्रव्य को निकालने के लिए मृग को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाया जाता है।

कस्तूरी तिलक क्यों लगाना चाहिए?

कस्तूरी तिलक लगाने से व्यक्ति के भीतर मौजूद सातों चक्र जागृत हो जाते हैं। इन चक्रों के जागृत होने से व्यक्ति में दिव्यता का संचार होता है और उसके अंदर सद्गुण जन्म लेते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, कस्तूरी तिलक रोजाना लगाने से व्यक्ति का भाग्य जाग उठता है और उसके बुद्धि तीव्र हो जाती है। उसकी मानसिक एवं शारीरिक क्षमता में बढ़ोतरी होती है और सफलता के मार्ग खुलते हैं।

कस्तूरी तिलक लगाने के क्या नियम हैं?

कस्तूरी तिलक लगाने से जुड़े कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक माना गया है। कस्तूरी तिलक हमेशा लंबा लगाया जाता है। गोल कस्तूरी तिलक लगाना वर्जित माना गया है। इसके अलावा, कस्तूरी तिलक को लगाते समय हमेशा उसमें कच्चा दूध मिलाकर लगाना चाहिए न कि पानी। एक बूंद दूध मिलाकर ही कस्तूरी तिलक लगाना चाहिए। कस्तूरी तिलक लगाने के बाद आधे घंटे तक कुछ खाना नहीं चाहिए।

कौन थे गजासुर जो आज भी ज्योतिर्लिंग रूप में पूजे जाते हैं?

काशी नगरी में भोलेनाथ विश्वनाथ के अलावा एक और शिवलिंग है, जिसे भगवान भोलेनाथ के मस्तक की मान्यता प्राप्त है। शिवपुराण के अनुसार यह शिवलिंग असुर राज गजासुर के ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजे जाते हैं।

यह तो हम सभी को पता है कि भारत में कुल 12 ज्योतिर्लिंग है, लेकिन इन 12 ज्योतिर्लिंग के अलावा एक ज्योतिर्लिंग ऐसा भी है, जिसे भगवान शिव का विशेष आशीर्वाद मिला है और यह ज्योतिर्लिंग गजासुर के रूप में पूजे जाते हैं। गजासुर का यह ज्योतिर्लिंग काशी के 14 महत्वपूर्ण मंदिर में से एक है और इस शिवलिंग की कथा का वर्णन शिवलिंग में भी मिलती है। चलिए जानते हैं इस शिवलिंग और असुर राज गजासुर के बारे में।

इस नाम से पूजे जाते हैं गजासुर

काशी में कृत्तिवाशेश्वर मंदिर एक ऐसा शिवलिंग है, जहां असुर राज गजासुर ज्योतिर्लिंग के रूप में विराजित हैं। काशी में यह मंदिर काशी विश्वनाथ मंदिर और महामृत्युंजय मंदिर के बीच में स्थित है। कहा जाता है कि इस मंदिर के दर्शन मात्र से मनुष्य को जन्म और मृत्यु के बंधन और मोह से मुक्ति मिल जाती है। सदियों से यह काशी के सबसे बड़े और पुराने मंदिर में से एक है।

गजासुर कौन थे?

गजासुर राक्षस महिषासुर के पुत्र थे। महिषासुर का वध मां दुर्गा ने किया था और गजासुर भी अपने पिता की तरह अत्याचारी राक्षस था। गजासुर अपने पिता के मृत्यु का बदला लेने के लिए घोर तपस्या की और ब्रह्मा जी को प्रसन्न उनसे महाबली और अजेय होने का वरदान मांगा। ब्रह्मा जी से वरदान पाकर गजासुर स्वयं को शक्तिशाली मान तीनों लोक में अत्याचार करने लगे।

शिव पुराण में भी है गजासुर की कथा

शिव पुराण के रूद्र संहिता, के पंचम खंड के 97 अध्याय में गजासुर के तपस्या, वध और काशी के कृत्तिवाशेश्वर महादेव के बारे में बताया गया है। ब्रह्मा जी से वरदान पाकर गजासुर महादेव की प्रिय नगरी काशी में जाकर आतंक मचाने लगा। गजासुर के अत्याचार से परेशान होकर सभी देवता और ऋषि मुनि महादेव के पास गए और उनसे सहायता मांगी।

देवताओं और साधु-संतों की सहायता के लिए शिव जी अपना त्रिशूल लेकर गजासुर के वध के लिए चले गए। गजासुर और महादेव के बीच महायुद्ध हुआ। गजासुर शिवजी को मारने के लिए तलवार लेकर दौड़े, वही शिव जी भी त्रिशूल लेकर गजासुर पर प्रहार करने लगे। शिवजी गजासुर को अपने त्रिशूल से उठा लिए और गजासुर अपना मृत्यु निकट जानकर शिवजी की आराधना करने लगे। गजासुर ने शिवजी से मांगी ये वरदान भगवान शिव की आराधना करते हुए गजासुर ने शिव जी से कहा कि हे प्रभु, आपने अपने पवित्र त्रिशूल से मेरे शरीर का स्पर्श किया है, इसलिए मैं चाहता हूं कि आप सदैव मेरे शरीर के चर्म को धारण करें। मेरी चर्म का ही ओढ़ना पहने और आज से आप कृत्तिवासा के नाम से जाने जाएं। शिव जी ने गजासुर की बात मान ली और कहा हे गजासुर तुम्हारे शरीर को इस काशी नगरी में मुक्ति मिलेगी। साथ ही तुम्हारा शरीर यहां ज्योतिर्लिंग के रूप में काशी में स्थापित होगा और इस ज्योतिर्लिंग का नाम कृत्तिवाशेश्वर से पूरे संसार में जाना जाएगा।

क्या खाली शंख घर या मंदिर में रखना सही है?

शास्त्रों में घर या मंदिर में शंख रखने से जुड़े कई नियम भी बताये गए हैं जिनका पालन आवश्यक माना गया है। हिन्दू धर्म शास्त्रों में शंख को माता लक्ष्मी का बड़ा भाई माना गया है। इसके अलावा, शंख की पूजा का भी विधान मौजूद है। इसी कारण से न सिर्फ घर या घर के मंदिर में लोग शंख रखते हैं बल्कि उसकी पूजा भी करते हैं। हालांकि शास्त्रों में घर या मंदिर में शंख रखने से जुड़े कई नियम भी बताये गए हैं जिनका पालन आवश्यक माना गया है।

ऐसा माना जाता है कि घर या घर के मंदिर में शंख रखने से घर की बरकत बनी रहती है, लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि लोग शंख लाकर उसे यूं ही रख देते हैं यानी कि शंख को खाली स्थापित कर देते हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या खाली शंख घर या घर के मंदिर में रखना चाहिए। आइये जानते हैं इस बारे में ज्योतिषाचार्य राधाकांत वत्स से विस्तार में।

घर में खाली शंख रखने से क्या होता है?

घर या घर के मंदिर में शंख रखने से सकारात्मकता का संचार होता है, लेकिन अगर घर या मंदिर में खाली शंख रखा है तो इससे नकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है और शंख की शुभता एवं दिव्य ऊर्जा खत्म हो जाती है। शास्त्रों में बताया गया है कि शंख को हमेशा शुद्ध जल से भरकर रखना चाहिए। इसके अलावा, शंख को पुष्प से भरकर भी रखा जा सकता है। शंख में जल भरकर रखने से घर में बुरी शक्तियां प्रवेश नहीं कर पाती हैं। वहीं, शंख में फूल भरकर रखने से घर में पारिवारिक शांति बनी रहती है और घर में परिवार के सदस्यों के बीच तालमेल बेहतर बनता है एवं मधुरता पनपने लगती है। शंख में फूल भरकर रखने से ग्रह दोष भी दूर होता है।

उज्जैन के 84 महादेव का स्कंद पुराण में है उल्लेख, नाम लेने से पूरी होती है मनोकामना

स्कंद पुराण के अवंती खंड में भी उल्लेख है कि उज्जैन में महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के साथ 84 महादेव, 6 विनायक, 24 देवियां, 8 भैरव, 11 रुद्र, 12 आदित्य, 10 विष्णु और 9 नारायण के मंदिर हैं। इसमें बताया गया है कि 84 महादेव का नाम लेने और इनके दर्शन से भक्त को विशेष फल की प्राप्ति होती है। उज्जैन शहर और इसके आस-पास स्थित हैं 84 महादेव के मंदिर।

उज्जैन के कर्कोटकेश्वर महादेव मंदिर में होती है काल सर्प दोष का पूजन। ऋण मुक्तेश्वर महादेव मंदिर में सभी ऋणों से मुक्ति के लिए होता है पूजन भगवान शिव की आराधना के लिए सोमवार को दिन सबसे श्रेष्ठ माना गया है। अगर सोमवार भगवान शिव के प्रिय सावन माह का हो तो यह आराधना के लिए और भी उत्तम है। सावन माह के सोमवार को बड़ी संख्या में भक्त उज्जैन में महाकाल की

84 महादेव से जुड़ी हैं अलग-अलग कथाएं

उज्जैन के 84 महादेव से अगल-अलग कथाएं जुड़ी हुई है। यहां अलग-अलग मंदिरों में भी पूजन का विशेष महत्व बताया गया है। जैसे कर्कोटकेश्वर महादेव मंदिर में काल सर्प दोष निवारण के लिए पूजा होती है। ऋण मुक्तेश्वर महादेव मंदिर में राजा हरिशचंद्र ऋण से मुक्ति पाई थी। जो भी भक्त ऋण से मुक्ति चाहता है, वो यहां पूजन करने पहुंचता है। ऐसे ही महादेव के अन्य मंदिरों में पूजन का अलग महत्व है।

1 - श्री अगस्त्येश्वर महादेव
2 - श्री गृहेश्वर महादेव
3 - श्री ढूंढेश्वर महादेव
4 - श्री डमरुकेश्वर महादेव
5 - श्री अनादिकल्पेश्वर महादेव
6- श्री स्वर्णजालेश्वर महादेव
7 - श्री त्रिविष्टपेश्वर महादेव
8 - श्री कपालेश्वर महादेव
9 - श्री स्वर्गद्वारेश्वर महादेव
10 - श्री कर्कोटकेश्वर महादेव
11 - श्री सिद्धेश्वर महादेव
12 - श्री लोकपालेश्वर महादेव
13 - श्री कामेश्वर महादेव
14 - श्री कुटुम्बेश्वर महादेव
15 - श्री इन्द्रद्युम्नेश्वर महादेव
16 - श्री ईशानेश्वर महादेव
17 - श्री आप्तारेश्वर महादेव
18 - श्री कलकलेश्वर महादेव
19 - श्री नागवण्डेश्वर महादेव
20 - श्री प्रतिहारेश्वर महादेव
21 - श्री कुटुम्बकेश्वर महादेव
22 - श्री कर्कटेश्वर महादेव
23 - श्री मेघनादेश्वर महादेव
24 - श्री महालयेश्वर महादेव
25 - श्री मुक्तेश्वर महादेव
26 - श्री सोमेश्वर महादेव
27 - श्री अनरकेश्वर महादेव
28 - श्री जटेश्वर महादेव
29 - श्री रामेश्वर महादेव
30 - श्री च्यवनेश्वर महादेव
31 - श्री खण्डेश्वर महादेव
32 - श्री फत्तनेश्वर महादेव
33 - श्री आनंदेश्वर महादेव
34 - श्री कन्थडेश्वर महादेव
35 - श्री इंद्रेश्वर महादेव
36 - श्री मार्कण्डेश्वर महादेव
37 - श्री शिवेश्वर महादेव
38 - श्री कुसुमेश्वर महादेव
39 - श्री अवरूरेश्वर महादेव
40 - श्री कुण्डेश्वर महादेव
41 - श्री लुम्पेश्वर महादेव
42 - श्री गंगेश्वर महादेव
43 - श्री अंगारेश्वर महादेव
44 - श्री उत्तरेश्वर महादेव
45 - श्री त्रिलोचनेश्वर महादेव
46 - श्री वीरेश्वर महादेव
47 - श्री नूपुरेश्वर महादेव
48 - श्री अभयेश्वर महादेव
49 - श्री पृथुकेश्वर महादेव
50 - श्री स्थावरेश्वर महादेव
51 - श्री शूलेश्वर महादेव
52 - श्री ओंकारेश्वर महादेव
53 - श्री विश्वेश्वर महादेव
54 - श्री कंटेश्वर महादेव
55 - श्री सिंहेश्वर महादेव
56 - श्री रेवन्तेश्वर महादेव
57 - श्री घंटेश्वर महादेव
58 - श्री प्रयागेश्वर महादेव
59 - श्री सिद्धेश्वर महादेव
60 - श्री मातंगेश्वर महादेव
61 - श्री सौभाग्येश्वर महादेव
62 - श्री रुपेश्वर महादेव
63 - श्री धनु: साहस्त्रेश्वर महादेव
64 - श्री पशुपतेश्वर महादेव
65 - श्री ब्रह्मेश्वर महादेव
66 - श्री जल्पेश्वर महादेव
67 - श्री केदारेश्वर महादेव
68 - श्री पिशाचमुक्तेश्वर महादेव
69 - श्री संगमेश्वर महादेव
70 - श्री दुर्धरेश्वर महादेव
71 - श्री प्रयागेश्वर महादेव
72 - श्री चन्द्रादित्येश्वर महादेव
73 - श्री करभेश्वर महादेव
74 - श्री राजरथलेश्वर महादेव
75 - श्री बडलेश्वर महादेव
76 - श्री अरुणेश्वर महादेव
77 - श्री पुष्पदन्तेश्वर महादेव
78 - श्री अविमुक्तेश्वर महादेव
79 - श्री हनुमत्केश्वर महादेव
80 - श्री स्वप्नेश्वर महादेव
81 - श्री पिंगलेश्वर महादेव,
82 - श्रीकायावरोहणेश्वर महादेव
83 - श्री बिल्वेश्वर महादेव
84 - श्री दुदुरेश्वर महादेव

भगवान श्रीराम की परीक्षा लेना चाहती थीं माता सती, शिव जी ने क्रोधित होकर किया देवी का त्याग

माता सती और बाद में उनके ही दूसरे रूप माता पार्वती ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कड़ी तपस्या की थी। माता सती की एक गलती के कारण उन्हें शिव जी ने पत्नी रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया था। इसके बाद उन्होंने माता पार्वती के रूप में दूसरा स्वरूप लिया था। माता पार्वती भगवान शिव की दूसरी पत्नी हैं। भगवान शिव की पहली पत्नी माता सती थीं। माता पार्वती, माता सती का ही स्वरूप मानी जाती हैं, लेकिन माता सती की एक गलती के कारण भगवान शिव ने उनका पत्नी के रूप में त्याग कर दिया था। उस समय वे दुखी होकर यज्ञ की अग्नि में समा गई थी और अपनी देह का त्याग कर दिया था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस ग्रंथ में इसका वर्णन किया है। इसके अनुसार माता पार्वती ने घोर तपस्या की और भगवान शिव को फिर से पति रूप में प्राप्त किया। इस तरह मां पार्वती के रूप में देवी सती ने जन्म लिया।

शिव ने सुनी थी रामकथा

एक बार भगवान शिव को रामकथा सुनने की इच्छा हुई। तब राम कथा सुनने की इच्छा से भगवान शिव, माता सती के साथ कुम्भज ऋषि के आश्रम पहुंचे और ऋषि से राम कथा सुनने की इच्छा व्यक्त की। तब ऋषि ने भगवान शिव और माता सती को प्रणाम किया और राम कथा सुनाना शुरू किया।

महादेव ने इसलिए किया देवी सती का त्याग

भगवान शिव ने बड़े भाव से रामकथा सुनी। कथा सुनने के बाद भगवान शिव, भगवान श्री राम की भक्ति के आनंद में डूब गए। वे माता सती के साथ वन की ओर लौट रहे थे तभी उन्होंने देखा कि वहां भगवान श्री राम अपनी पत्नी से अलग होकर अपने भाई लक्ष्मण के साथ माता सीता की खोज में भटक रहे थे। वहां भगवान शिव ने श्रीराम को आदरपूर्वक प्रणाम किया। यह देखकर माता सती के मन में संदेह उत्पन्न हो गया। वह सोचने लगीं कि जिन भगवान शिव को सभी प्रणाम करते हैं, वे एक साधारण राजकुमार को क्यों प्रणाम करेंगे, जो स्वयं अपनी पत्नी के वियोग से दुखी और व्याकुल है।

सती ने धारण किया सीता का रूप

इस संदेह को दूर करने के लिए उन्होंने भगवान शिव से सवाल किया। शिव जी ने माता सती को समझाया कि यह कोई साधारण राजकुमार नहीं हैं, बल्कि स्वयं भगवान राम हैं, जिनकी कहानी उन्होंने अभी-अभी सुनी है। यह सब भगवान श्रीराम की ही लीला है। इसके बावजूद माता सती भगवान शिव की बातों से संतुष्ट नहीं हुईं। माता सती को इसे स्वीकार करने में संदेह हुआ, उन्होंने भगवान श्रीराम की परीक्षा लेने का निर्णय लिया। भगवान शिव ने माता सती को ऐसा करने से रोका, लेकिन वे नहीं मानीं। देवी सती ने माता सीता का रूप धारण किया और उसी स्थान पर बैठ गईं, जहां से श्रीराम और लक्ष्मण आए थे। जैसे ही श्री राम ने माता सती को सीता के रूप में देखा, उन्होंने माता सती को प्रणाम किया और पूछा, माता, आप वन में अकेली क्या कर रही हैं? महादेव कहां हैं?

भगवान शिव से कहा झूठ

श्रीराम की यह बात सुनकर माता सती समझ गईं कि राम वास्तव में भगवान विष्णु के अवतार हैं। उन्हें अपनी गलती का अनुभव हुआ और वे भगवान शिव के पास लौट आईं। जब शिवजी ने माता सती से पूछा कि वहां क्या हुआ है, तो माता सती ने झूठ बोल दिया कि कुछ नहीं हुआ है, वे सिर्फ भगवान श्रीराम को प्रणाम करके लौटी हैं। भगवान शिव उनके इस झूठ को समझ गए और पूरी घटना जानकर बहुत दुखी हुए।

अग्नि में समा गई थीं देवी सती

देवी सती ने अपने आदर्श श्री राम की पत्नी माता सीता का रूप धारण किया था, इसलिए भगवान शिव ने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त की और मानसिक और शारीरिक रूप से माता सती को त्याग दिया। सती को अपनी गलती का एहसास हुआ, वह जानती थीं कि अब महादेव उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। तब माता सती ने अपना शरीर त्यागने का निर्णय लिया। इसीलिए वे बिना बुलाए अपने पिता राजा दक्ष के यज्ञ में चली गईं और वहीं यज्ञ की अग्नि में खुद को समाकर अपना शरीर त्याग दिया।

कलिंग समाचार

बुधवार 12 अगस्त 2026

बदलाव की राजनीति का शंखनाद

जनता ने बदलाव की राजनीति का शंखनाद कर दिया है, यह वक्तव्य दतिया की जनता के लिए मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने दिया है। लेकिन देखा जाए तो यह देशव्यापी स्तर पर भी सटीक बैठ रहा है। मध्यप्रदेश, गुजरात और बिहार तीनों भाजपाशासित राज्यों में एक-एक विधानसभा सीट पर उपचुनाव हुए, जिनमें भाजपा केवल गुजरात की सीट बचा पाई, जबकि मध्यप्रदेश और बिहार में उसे बड़ा झटका मिला है। इन सीटों की हार या जीत से मध्यप्रदेश, गुजरात या बिहार की मौजूदा सत्ता पर कोई असर नहीं पड़ेगा, लेकिन ये नतीजे राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के लिए बड़ा राजनीतिक झटका माने जा रहे हैं। भाजपा को तीनों सीटों पर अपनी जीत का इतना यकीन था कि उसने पहले से मिठाई बंटवाने का इंतजाम कर लिया था। बिहार की बांकीपुर सीट पर जीत का जश्न मनाने के लिए दो सौ किलो लड्डू बनाने का वीडियो सोशल मीडिया पर तैर रहा है। अब जीत के लिए बने इन लड्डुओं को विजेता बन कर उभरे प्रशांत किशोर के साथ क्या भाजपा साझा करेगी, ये उलझाने वाला सवाल बिहार में खड़ा हो चुका है। माफी दरअसल बांकीपुर पर हार या जीत को केवल जनादेश कहकर इसका विश्लेषण खत्म नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस सीट पर ढेर सारे किंतु-परंतु चस्पां हैं। बांकीपुर भाजपा के लिए पार्टी के तौर पर तो प्रतिष्ठा का सवाल थी ही, क्योंकि बिहार में सम्राट चौधरी को भाजपा ने मु यमंत्री बनाया, पहली बार सत्ता पर सीधे भाजपा की पकड़ बनी। इसके लिए नीतीश कुमार से वादाखिलाफी करके उन्हें मु यमंत्री की कुर्सी छोड़ने के लिए मजबूर किया गया और 20 सालों की उनकी सत्ता का हासिल आखिर में राज्यसभा सीट बना दिया गया। सम्राट चौधरी के मु यमंत्री रहते पहली बार उपचुनाव हुए और उसमें बड़ी हार मिली तो यह निश्चित तौर पर भाजपा के लिए झटका है, लेकिन उससे बड़ा झटका यह है कि बांकीपुर सीट नितिन नबीन के राज्यसभा में जाने के कारण खाली हुई थी। भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने के बाद नितिन नबीन को विधानसभा छोड़कर राज्यसभा में जाने कहा गया और अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठने के बावजूद उन्हें भाजपा के असली आकाओं का यह फरमान मानना पड़ा। नरेन्द्र मोदी ने नितिन नबीन को अध्यक्ष की कुर्सी पर बिठाकर फूल-मालाएं पहनाकर उन्हें अपना बॉस बताया था। लेकिन बॉस की सीट बचाने की कोई कोशिश न नरेन्द्र मोदी ने की, न अमित शाह ने की, तो यह संशय उपजता है कि आखिर इनकी पॉलिटिक्स क्या है। क्या जानबूझकर नितिन नबीन की पारंपरिक सीट को हारा गया है, क्योंकि बांकीपुर की सोशल इंजीनियरिंग भी भाजपा के ही फायदे की ही है। यहां सवर्ण मतदाताओं की सं या अल्पसं यकों और पिछड़ों से ज्यादा है। जुलाई महीने में नितिन नबीन चार-चार बार बांकीपुर आए, ताकि प्रचार अच्छे से हो सके। लेकिन इससे पहले इस सीट पर नामांकन से ठीक पहले भाजपा के प्रत्याशी बने अभिषेक बंटी ने नाम वापस लिया और फिर उनकी जगह नीरज सिन्हा को उ मीदवार बनाया गया। हालांकि प्रत्याशी के नाम से ज्यादा नितिन नबीन के नाम पर चुनाव लड़ा गया, क्योंकि पहले पांच बार नितिन नबीन और उससे पहले चार बार उनके पिता इस सीट से विधायक बनते रहे। 30 सालों तक बांकीपुर सीट भाजपा के पास रही और अब जनसुराज पार्टी के प्रशांत किशोर के पास चली गई है। चुनावी रणनीति बनाते-बनाते प्रशांत किशोर इस बिहार विधानसभा चुनाव से पहले जनसुराज पार्टी बनाकर खुद चुनावी राजनीति में आ गए थे। उन्होंने खुद किसी सीट पर चुनाव नहीं लड़ा था, लेकिन उनके प्रत्याशी जितनी सीटों पर खड़े हुए, सब जगह उन्हें हार मिली थी। मगर अब बिहार विधानसभा में एक विधायक जनसुराज पार्टी का भी रहेगा। देखना ये है कि प्रशांत किशोर भाजपा की आवाज मजबूत करते दिखेंगे या विपक्ष की। क्योंकि उन्होंने इस जीत के बाद कहा है कि %यह विधायक बनाने का उपचुनाव नहीं है। बल्कि भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व को संदेश देने का चुनाव है कि बिहार में किसी अच्छे व्यक्ति को मु यमंत्री बनाइए। किसी अपराधी या गलत चरित्र वाले नेता को मु यमंत्री मत बनाइए।'

किस मजूबरी ने मोदी को ट्रंप-नेतन्याहू का पिछलग्गू बनाया?

अनिल जैन

भारत और ईरान के बीच बहुत घनिष्ठ व्यापारिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। भारत अपनी जरूरत का 15 फीसदी तेल ईरान से आयात करता था, वह भी बेहद वाजिब दाम पर लेकिन अमेरिका के दबाव में भारत को तेल का आयात बंद करना पड़ा। भारत के लिए रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण चाबहार पोर्ट का मामला भी ताजा ही है। भारत की आजादी के आठ दशक में यह पहला मौका है जब उसके एक बेहद भरोसेमंद और मददगार मित्र देश पर दुनिया के दो शक्तिशाली देशों ने अपने निहित स्वार्थों के चलते हमला कर दिया है। इसमें उसके सर्वोच्च नेता की मौत हो गई है और भारत सरकार मूकदर्शक बनी हुई है। उसने न तो हमले की निंदा की है और न ही मित्र देश के सर्वोच्च नेता की मौत पर शोक जताने का राजनयिक शिष्टाचार निभाया है। यह स्थिति तब है जब भारत में एक ऐसी पार्टी की सरकार है जो अपने को भारतीय संस्कृति और परंपरा की एकमात्र वाहक और भारत को विश्वगुरू मानती है। भारतीय संस्कृति और परंपरा हमें सिखाती है कि हम किसी के सुख में भले ही शरीक न हों लेकिन दुख या संकट की घड़ी में जरूर उसके साथ खड़े होना चाहिए।

ईरान पर अमेरिका और इज़राइल के निर्मम हमले और उसमें ईरान के वयोवृद्ध सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खामेनेई के मारे जाने पर भारत सरकार और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुप्पी बेहद शर्मनाक है। इस चुप्पी से मोदी देश में इस्लामोफोबिया से ग्रस्त अपने समर्थक वर्ग की निगाहों में भले ही और ऊंचे चढ़ जाएं, लेकिन उनका यह रवैया दुनिया भर में भारत को शर्मसार कराने वाला है। यह भी कम शर्मनाक नहीं है कि ईरान पर हमले से दो दिन पहले ही मोदी ने इज़राइल की यात्रा की। इज़राइल ने मोदी को ऐसे समय में अपने यहां आमंत्रित किया जब वह अमेरिका के साथ मिलकर ईरान पर हमले की योजना बना चुका था।

कहने को तो इज़राइल ने मोदी को %स्पीकर ऑफ द कनेसेट मेडल% स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन हकीकत यह है कि इज़राइल के प्रधानमंत्री बिन्यामीन नेतन्याहू ने मोदी की यात्रा का इस्तेमाल हमले की तैयारी पर पर्दा डालने के लिए किया। उन्हें सर्वोच्च संसदीय स मान देना तो महज एक बहाना था। दिलचस्प बात यह भी है कि यह स मान मोदी से पहले किसी को भी नहीं दिया गया। इसे वैसा ही स मान कहा जा सकता है जैसे 2019 में मोदी को किसी ने %फिलिप कोटलर प्रेसिडेंशल अवॉर्ड% दिया था, जिस पर मोदी की जगहंसाई हुई थी। वह अवॉर्ड भी न तो मोदी से पहले किसी को दिया गया था और न ही उनके बाद किसी को दिया गया।

बहरहाल ईरान पर हमले की तैयारी के बीच मोदी की इस यात्रा से साबित हुआ कि भारतीय विदेश नीति पूरी तरह दिशाहीन हो चुकी है। मोदी और उनकी सरकार राष्ट्रीय हितों को लेकर पूरी तरह बेखबर और बेसुध है और भारतीय खुफ़िया तंत्र पूरी तरह नाकारा। पिछले 12 वर्षों के दौरान मोदी ने विदेशी राष्ट्राध्यक्षों से गले मिलने, उनसे लिपटने और उनके साथ बात-बेबात ठहाके लगाने को ही सफल कूटनीति माना है। इस इज़राइल यात्रा के दौरान भी उन्होंने यही किया। वे इज़राइल पहुंचने पर भी मेजबान नेतन्याहू से गले मिले और वहां से लौटते वक्त तो वे नेतन्याहू से लिपटकर इस तरह सिसक रहे थे जैसे बेटी ससुराल जाने से पहले अपने पिता से लिपट कर रोती है। रही बात खुफ़िया तंत्र की, तो उसका नाकारापन पुलवामा, पठानकोट, पहलगाम आदि में हुए भीषण आतंकवादी हमलों के अलावा भी कई मामलों में जाहिर हो चुका है।

लोकतांत्रिक देशों में सरकारें बदलती रहती हैं। जो नई सरकारें आती हैं, वे अपने हिसाब से बहुत कुछ बदलाव करती हैं लेकिन देश की विदेश नीति की निरंतरता कमोबेश बनी रहती हैं। हालांकि कोई भी देश तात्कालिक परिस्थितियों के हिसाब से जरूरी होने पर अपनी विदेश नीति में बदलाव भी करता है। वह अपने राष्ट्रीय हितों के हिसाब से नए अंतरराष्ट्रीय दोस्त बनाता है और किसी पुराने मित्र देश से धीरे-धीरे किनारा भी कर लेता है। मगर अपने हितों को गहरे तक प्रभावित करने वाले किसी अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम से बेखबर नहीं रह सकता, खास कर भारत जैसा देश; और वह भी ईरान जैसे भरोसेमंद दोस्त को लेकर। ईरान कोई सुदूरवर्ती छोटा-मोटा देश नहीं है। वह भौगोलिक रूप से तो नहीं, फिर भी एक तरह से भारत का पड़ोसी है। उससे भारत के रिश्ते भी कोई बीस-पच्चीस साल नहीं, बल्कि सदियों पुराने रहे हैं। खुद मोदी ने 2016 में अपनी ईरान यात्रा के दौरान अयातुल्लाह खामेनेई को करीब 1300 साल पुरानी यानी सातवीं सदी में कुफिक लिपि में लिखी हुई कुरआन शरीफ की दुर्लभ पांडुलिपि उपहार के तौर पर भेंट की थी और कहा था कि, %ईरान से भारत के रिश्ते उतने ही पुराने हैं, जितना पुराना दुनिया का इतिहास है।% यही नहीं, दो साल पहले ईरान के राष्ट्रपति की मौत पर भारत सरकार ने राजकीय शोक भी घोषित किया था। भारत और ईरान के बीच बहुत घनिष्ठ व्यापारिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। भारत अपनी जरूरत का 15 फीसदी तेल ईरान से आयात करता था, वह भी बेहद वाजिब दाम पर लेकिन अमेरिका के दबाव में भारत को तेल का आयात बंद करना पड़ा। भारत के लिए रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण चाबहार पोर्ट का मामला भी ताजा ही है। वही चाबहार पोर्ट जिसके लिए ईरान से समझौता होने को प्रधानमंत्री मोदी ने 2024 के लोकसभा चुनाव के दौरान अपने एक भक्त टीवी चैनल के कीर्तनकारों के सामने बैठ कर डींग हांकते हुए अपना %कूटनीतिक कौशल% बताया था। उन्होंने कहा था कि उनकी सरकार कोई भी फैसला इस आधार पर नहीं लेती कि कोई तीसरा देश क्या सोचेगा। भारत उस परियोजना पर लगभग 12 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च कर चुका था लेकिन दो महीने पहले ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के धमकी भरे दबाव में उस महत्वाकांक्षी परियोजना से भारत को अलग होना पड़ा। ज़्यादा जानें ई-पेपर सदस्यता समाचार वेबसाइट विज्ञापन समाचार पत्र विज्ञापन ईरान ने कई महत्वपूर्ण और नाजुक मौकों पर दुनिया के शक्तिशाली देशों के विरोध को दरकिनार करते हुए भी भारत की मदद की है, जिसके किस्से इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं। ऐसे किस्सों में उल्लेखनीय किस्सा 1990 के दशक के शुरुआती सालों का है जब कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच हालात बेहद तनावपूर्ण थे। पाकिस्तान ने इस मसले पर मुस्लिम देशों के संगठन इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) में भारत के खिलाफ प्रस्ताव सर्वस मति से पारित कराने के लिए अभियान छेड़ रखा था। हुर्रियत कांफ्रेन्स के कुछ नेताओं ने नई दिल्ली में ईरानी राजदूत से भी मुलाकात कर समर्थन मांगा था। तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंह राव ने महसूस कर लिया था कि यदि ओआईसी में कश्मीर पर भारत के खिलाफ प्रस्ताव पारित हो गया तो भारत के लिए कितनी मुश्किलें खड़ी हो जाएंगी। दरअसल पाकिस्तान और आईओसी के कई सदस्य देशों ने भारत के खिलाफ़ ऐसा चक्रव्यूह रचा था, जिसमें कश्मीर मुद्दे के बहाने पश्चिमी देश भारत पर कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाने के लिए तैयार हो गए थे। उस समय विदेश मंत्री दिनेश सिंह बीमार होने की वजह से अस्पताल में भर्ती थे लेकिन हालात की नज़ाकत को भांपते हुए उन्होंने बीमारी की हालत में ही व्हील चेयर पर विशेष विमान से तेहरान की आपातकालीन यात्रा की थी। उनकी वह यात्रा बेहद गोपनीय रखी गई थी और वे प्रधानमंत्री नरसिंह राव का एक व्यक्तिगत संदेश लेकर गए थे। तेहरान में उन्होंने अपने ईरानी समकक्ष और राष्ट्रपति अली अकबर हाशमी रफसंजानी से मुलाकात कर भारत का पक्ष विस्तार से रखा। उसके बाद ईरान ने अपने रुख पर पुनर्विचार कर पाकिस्तान के प्रस्ताव को समर्थन देने से अपने हाथ खींच लिए। ईरान के इस रुख से आईओसी में भारत के खिलाफ प्रस्ताव पारित नहीं हो सका था। पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी थी और उसने तिलमिला कर ईरान को %धोखेबाज% तक कह दिया था। अपने मिशन में कामयाब रहे दिनेश सिंह को किसी ने %जे स बांड% या उनकी यात्रा को किसी ने %मास्टर स्ट्रोक% या नरसिंह राव को किसी ने %विश्वगुरू% नहीं कहा। ऐसी मूर्खतापूर्ण उपमाएं देने की जरुरत भी नहीं थी। ज़्यादा जानें तकनीकी समाचार बुलेटिन मनोरंजन उद्योग रिपोर्ट ताज़ा ख़बरें सूचना अब सवाल है कि आखिर ऐसे भरोसेमंद दोस्त देश को लेकर अचानक ऐसा क्या हो गया कि मोदी ने खुद को और देश को भी शर्मसार कराने वाली खामोशी ओढ़ ली है। देश ही नहीं, दुनिया भर को पता है कि जिन-जिन देशों के नेता दुर्दांत यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन से किसी न किसी रूप में जुड़े रहे हैं, वे ही सारे देश आज ईरान पर अमेरिका और इजराइल के हमले का समर्थन कर रहे हैं या खामोश बने हुए हैं। दुर्भाग्य से भारत को भी ऐसे ही देशों में शुमार किया जा रहा है।

किसान यूनियन भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के खिलाफ एकजुट होकर लड़ेंगे

जग मोहन ठाकन

एसकेएम नेता और ऑल इंडिया किसान सभा (एआईकेएस) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंदरजीत सिंह ने कहा, %अमेरिका के साथ तथाकथित समझौता असल में देश के हितों, उसकी स प्रभुता, ज़रूरी कृषि क्षेत्र और कई तरह के औद्योगिक सामान को खुलेआम बेचना है। भारत आयात टैरिफ को शून्य कर देगा, जबकि अमेरिका भारतीय सामानों के अमेरिका को निर्यात पर 18प्रतिशत टैरिफ लगाएगा। भारतीय किसान यूनियन भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के खिलाफ एकजुट होकर लड़ने के लिए कमर कस रहे हैं। मु य किसान यूनियनों ने हरियाणा के कुरुक्षेत्र में संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) के बैनर तले बैठक की और भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के खिलाफ पूरे भारत में एक साथ लगातार संघर्ष की योजना बनाई, जिसमें दूसरे ज़रूरी मुद्दे भी शामिल थे।

एसकेएम नेता और ऑल इंडिया किसान सभा (एआईकेएस) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंदरजीत सिंह ने कहा, अमेरिका के साथ तथाकथित समझौता असल में देश के हितों, उसकी स प्रभुता, ज़रूरी कृषि क्षेत्र और कई तरह के औद्योगिक सामान को खुलेआम बेचना है। भारत आयात टैरिफ को शून्य कर देगा, जबकि अमेरिका भारतीय सामानों के अमेरिका को निर्यात पर 18प्रतिशत टैरिफ लगाएगा। अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ट्रंप के टैरिफ को गैर-संवैधानिक ठहराए जाने के बाद भी, भारत ने एकतरफ़ा फ्री ट्रेड घोषणा के खिलाफ अपनी बात नहीं रखी है। अब भारत को इस समझौते पर हस्ताक्षर नहीं करना चाहिए और इसके बजाय वैश्विक दक्षिण के दूसरे विकासशील देशों और ब्रिक्स, शंघाई कोऑपरेशन आदि जैसे गुटों के साथ मिलकर विकसित देशों के साथ बातचीत करनी चाहिए, जैसा कि पिछले ह ते नई दिल्ली में ब्राज़ील के राष्ट्रपति लूला दा सिल्वा ने सही सुझाव दिया था।

कुरुक्षेत्र में हुई एसकेएम की बैठक में इस समझौते के खिलाफ उठाए जाने वाले कदमों के बारे में बताते हुए, डॉ. इंद्रजीत ने बताया, %एसकेएम की राष्ट्रीय परिषद बैठक में यह तय किया गया है कि जब तक सभी बड़ी मांगें पूरी नहीं हो जातीं, जैसे भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर न करना, बिजली विधेयक, बीज विधेयक, चारों श्रम संहिताएं, जी राम जी अधिनियम,सी2+50प्रतिशत की दर पर एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी, कर्ज माफी और एलएआरआर अधिनियम 2013 को लागू करने की मु य मांगें पूरी नहीं हो जातीं, तब तक मजदूरों के साथ मिलकर स्वतंत्र संघर्षों के साथ एकजुट संघर्षों को तेज किया जाएगा। एसकेएम केन्द्रीय श्रम संगठनों के प्लेटफॉर्म और खेती-बाड़ी करने वाले मजदूर यूनियनों के साथ समन्वय बैठक करेगा और एकजुट संघर्षों की आखिरी योजना तय करेगी।'

इस बैठक में एसकेएम ने तय किया कि किसानों का संगठन 9 मार्च तक जनसभाओं के ज़रिए गांवों तक संघर्ष को ले जाएगा, जिसमें भारत के राष्ट्रपति से वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल को हटाने, प्रधानमंत्री को देश विरोधी भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर न करने का निर्देश देने और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को गेहूं और धान उपजाने वाले किसानों को बोनस खत्म करने का अर्ध-सरकारी पत्र वापस लेने का निर्देश देने की मांग की जाएगी। किसान भारत के राष्ट्रपति को ऐसे खुले खत भेजने के लिए पोस्ट ऑफिस तक जुलूस निकालेंगे। बैठक में उन गांवों में अभियान चलाने का फैसला किया गया जहां सेब, सोयाबीन, कपास, मक्का वगैरह जैसी प्रभावित हुई फसलें उगाई जाती हैं।

एसकेएम के प्रतिनिधिमंडल अपने-अपने राज्यों के मु यमंत्रियों और विपक्ष के नेताओं से मिलेंगे और मांग करेंगे कि वे मोदी सरकार द्वारा बिजली के केन्द्रीकरण का विरोध करें और राज्यों के गणराज्यीय अधिकारों की रक्षा करें, संसद से राज्यों की कर लगाने की शक्ति को वापस लाने के लिए जीएसटी कानून में बदलाव करने की अपील करें, सेस और सरचार्ज सहित विभाज्य पूल में मौजूदा 33प्रतिशत के बजाय राज्यों को 60प्रतिशत हिस्सा दें। बैठक में श्रम संगठनों और खेती-बाड़ी के मजदूरों के प्लेटफॉर्म के साथ संसद के अगले सत्र के पहले दिन 9 मार्च को जंतर-मंतर पर एक मजदूर-किसान संसद आयोजित करने का फैसला किया गया। ज़्यादा जानें शीर्षक खोज उपकरण चुनावी जागरूकता अभियान विदेश समाचार सेवा एसकेएम की बैठक में पंजाब, हरियाणा, ज मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र और केरल समेत 9 राज्यों के 150 लोग शामिल हुए। बैठक में सभी राज्य के समन्वय समितियों से कहा गया कि वे 10 मार्च को बरनाला, पंजाब से शुरू होकर 13 अप्रैल जलियांवाला बाग दिवस तक पूरे भारत में महापंचायतें करें। इन महापंचायतों में हज़ारों किसान इकट्ठा होंगे और भारत-अमेरिका व्यापार समझौता और मोदी सरकार की दूसरी कॉर्पोरेट-समर्थक नीतियों के खतरों के बारे में बताएंगे और भविष्य में लंबे संघर्ष की तैयारी करेंगे। एसकेएम के एक बयान में बताया गया है कि 23 मार्च शहीद दिवस को पूरे भारत में औपनिवेशिक विरोधी दिवस के तौर पर मनाया जाएगा, जिसकी विस्तृत योजना राज्य स्तर पर बनाई जाएगी। बैठक में पंजाब, ओडिशा और महाराष्ट्र में किसानों के आंदोलनों पर पुलिस के जुल्म की निंदा करने का एक प्रस्ताव भी पास किया गया। सात सदस्यों वाले अध्यक्ष मंडल की अध्यक्षता में हुई बैठक में जोगिंदर सिंह उगराहां, राकेश टिकैत, डॉ. अशोक धावले, आशीष मित्तल, जगमोहन सिंह, राजन क्षीरसागर और जोगिंदर सिंह नैन शामिल थे। इस बैठक में संयुक्त किसान मोर्चा नॉन-पॉलिटिकल (इंडिया) के भेजे गए पत्र पर चर्चा की गई और उनसे बातचीत करने के लिए जोगिंदर सिंह उगराहां, युद्धवीर सिंह, पी कृष्णप्रसाद, रमिंदर सिंह पटियाला और बलदेव सिंह निहालगढ़ की पांच सदस्यों वाली कमेटी बनाने का फैसला किया गया। यह भी तय किया गया कि एमएसपी और उससे जुड़े मुद्दों पर किसानों की मांगों पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बनाई गई कमेटी से मिलने के लिए 15 सदस्यों वाली कमेटी बनाई जाएगी।

एसकेएम के दिशानिर्देश के मुताबिक, ऑल इंडिया किसान सभा (एआईकेएस) की हरियाणा राज्य कमेटी ने राष्ट्रीय परिषद द्वारा दिए गए संघर्षों के आह्वान का समर्थन किया है। संयुक्त किसान मोर्चा की मंगलवार को कुरुक्षेत्र में बैठक हुई। मास्टर बलबीर सिंह की अध्यक्षता में, 26 फरवरी को हुई राज्य स्तरीय बैठक में सभी पदाधिकारी और ज़िले के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंद्रजीत सिंह ने बताया कि अमेरिका के साथ एकतरफ़ा और किसान विरोधी व्यापार समझौता कैसे पहले से ही मुश्किल में फंसे किसानों के लिए नुकसानदायक है, क्योंकि अमेरिका ने इस असमान समझौते के तहत भारत के बड़े बाज़ार को भर दिया है। जिन दूसरे मुद्दों की सबसे ज़्यादा आलोचना हुई, उनमें बाढ़ से फ़सलों को हुए नुकसान का सही मुआवज़ा न देने के मामले में हरियाणा सरकार का धोखेबाज़ रवैया, प्राइवेट इंश्योरेंस कंपनियों के भ्रष्टाचार के घोटालों को बचाना और धान खरीद के घोटालों में कोई कार्रवाई न करना शामिल है। एसकेएम के साथ एक जैसा रवैया दिखाते हुए, किसान सभा के कार्यकर्ता 9 मार्च से पहले पूरे राज्य में किसानों से संपर्क करेंगे ताकि उन्हें आयात टैरिफ़ खत्म करके मुक्त व्यापार समझौते से होने वाले खतरों के बारे में जागरूक किया जा सके। इस समानान्तर सत्र में भारत के राष्ट्रपति से प्रधानमंत्री को देश विरोधी भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर न करने, बिजली संशोधन विधेयक, बीज विधेयक, श्रम संहिताओं को वापस लेने और मनरेगा को फिर से लागू करने का निर्देश देने की मांग की जाएगी। यद्यपि एसकेएम ने श्रम संगठनों और खेतीहर मज़दूरों के प्लेटफॉर्म के साथ संसद के अगले सत्र के पहले दिन 9 मार्च को जंतर-मंतर पर मज़दूर-किसान संसद आयोजित करने का फैसला किया है, सवाल बना हुआ है कि क्या वे दिल्ली में घुसने में कामयाब होंगे? क्या भाजपा की केंद्र सरकार, जिसने तीन खेती-बाड़ी के बिलों के खिलाफ़ किसानों के आंदोलन के दौरान 13 महीने तक किसानों के दिल्ली में प्रवेश पर रोक लगाई थी, किसानों को ऐसा करने देगी? क्या यह फिर से किसानों और सरकार के बीच एक और रस्साकशी होगी?

विविध समाचार

मानसा में दिल दहला देने वाली घटना : 3 मासूम बच्चों की मौत के बाद महिला ने की आत्महत्या, जांच में जुटी पुलिस

मानसा। पंजाब के मानसा जिले से एक बेहद दर्दनाक घटना सामने आई है। शहर के वार्ड नंबर–3 में एक महिला और उसके तीन नाबालिग बच्चों के शव मिलने से पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि महिला ने पहले अपने तीनों बच्चों की हत्या की और बाद में खुद फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने चारों शवों को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार, महिला के पति का करीब चार वर्ष पहले निधन हो चुका था। इसके बाद वह अपनी सास और तीन बच्चों के साथ किराये के मकान में रह रही थी। मृतकों में दो बेटियां और करीब डेढ़ साल का एक बेटा शामिल है। घटना के बाद पूरे क्षेत्र में शोक का माहौल है। सूचना मिलते ही थाना सिटी–2 की पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद चारों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस का कहना है कि शुरुआती जांच में आशंका है कि बच्चों को पहले किसी जहरीले पदार्थ का सेवन कराया गया और बाद में उनकी गला दबाकर हत्या की गई। इसके बाद महिला ने कथित तौर पर फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। हालांकि, पुलिस ने स्पष्ट किया है कि मौत के वास्तविक कारणों की पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और फोरेंसिक जांच के बाद ही हो सकेगी। जांच अधिकारी कुलवंत सिंह ने बताया कि पुलिस मामले के हर पहलू की गंभीरता से जांच कर रही है। परिवार के सदस्यों और आसपास के लोगों से पूछताछ की जा रही है। घटनास्थल से मिले साक्ष्यों को भी जांच में शामिल किया गया है, ताकि घटना के पीछे की वास्तविक वजह का पता लगाया जा सके। फिलहाल इस सामूहिक मौत के कारण स्पष्ट नहीं हो सके हैं। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट, फोरेंसिक जांच और अन्य साक्ष्यों के आधार पर मामले की निष्पक्ष जांच की जा रही है। जांच पूरी होने के बाद ही घटना के पीछे की असली वजह सामने आ सकेगी।

पलवल पत्रकार प्रकरण : एमडब्ल्यूबी का प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव और एडीजीपी लॉ एंड ऑर्डर से मिला

चंडीगढ़। मीडिया वेल बीइंग एसोसिएशन (रजिस्टर्ड) के उत्तर भारत अध्यक्ष चंद्र शेखर धरणी के नेतृत्व में संगठन का एक प्रतिनिधिमंडल शुक्रवार को हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के मीडिया सचिव प्रवीण अत्रेय तथा हरियाणा के एडीजीपी (लॉ एंड ऑर्डर) संजय कुमार से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने पलवल के जिला लोक संपर्क अधिकारी (डीआईपीआरओ) पर संगठन के पलवल जिलाध्यक्ष गुरुदत्त गर्ग एवं अन्य पत्रकारों के साथ कथित दुर्व्यवहार, अभद्रता तथा पत्रकारिता कार्य में बाधा पहुंचाने के आरोपों को गंभीर बताते हुए मामले में निष्पक्ष जांच और सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की। प्रतिनिधिमंडल ने अधिकारियों को ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि पत्रकारों के साथ इस प्रकार का व्यवहार लोकतांत्रिक व्यवस्था, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा प्रेस की गरिमा के विपरीत है। संगठन ने संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करते हुए उन्हें सेवा से बर्खास्त किए जाने की भी मांग उठाई। मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव प्रवीण अत्रेय ने प्रतिनिधिमंडल की बात गंभीरता से सुनते हुए तत्काल डीजीआईपीआर हरियाणा से चर्चा की। उन्होंने आश्वस्त किया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की सरकार सदैव पत्रकारों के सम्मान और प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्ध रही है।उन्होंने कहा कि गुरुदत्त गर्ग से जुड़े मामले में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उनके आधार पर सरकार और संबंधित विभाग नियमानुसार उचित कार्रवाई करेंगे। उन्होंने दोहराया कि मुख्यमंत्री स्वयं मीडिया की स्वतंत्रता के पक्षधर हैं और पत्रकारों के सम्मान से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। हरियाणा के एडीजीपी (लॉ एंड ऑर्डर) संजय कुमार ने प्रतिनिधिमंडल को भरोसा दिलाया कि पुलिस पूरे मामले की निष्पक्ष एवं ईमानदारी से जांच करेगी। उन्होंने कहा कि शिकायत के प्रत्येक पहलू की जांच कर कानून के अनुसार आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। प्रतिनिधिमंडल ने अधिकारियों को बताया कि संगठन के पलवल जिलाध्यक्ष गुरुदत्त गर्ग की ओर से इस मामले में एसपी पलवल कार्यालय में लिखित शिकायत दी जा चुकी है। शिकायत पुलिस बुक संख्या 419 में प्राप्ति रसीद संख्या 75, दिनांक 2 जुलाई 2026 के तहत दर्ज की गई है। संगठन के कोषाध्यक्ष तरुण कपूर ने कहा कि मीडिया वेल बीइंग एसोसिएशन पत्रकारों के साथ कथित दुर्व्यवहार की कड़े शब्दों में निंदा करती है। उन्होंने कहा कि यदि किसी पत्रकार को वीडियो रिकॉर्डिंग से रोका गया, कैमरे पर हाथ मारा गया अथवा अभद्र व्यवहार किया गया, तो यह केवल एक पत्रकार के अधिकारों का उल्लंघन नहीं बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रेस की स्वतंत्रता पर भी सीधा आघात है। उन्होंने कहा कि जिला लोक संपर्क अधिकारी का दायित्व सरकार और मीडिया के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना तथा पत्रकारों को सहयोग प्रदान करना है। यदि इसी पद पर बैठा अधिकारी पत्रकारों के साथ अमर्यादित व्यवहार करता है तो इससे न केवल पत्रकारों की भावनाएं आहत होती हैं बल्कि सरकार की छवि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। तरुण कपूर ने मांग की कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाए और यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई करते हुए उन्हें सेवा से बर्खास्त किया जाए। उन्होंने कहा कि सरकार और मीडिया के बीच विश्वास एवं संवाद का वातावरण लोकतंत्र की मजबूती के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यदि आवश्यकता हुई तो मीडिया वेल बीइंग एसोसिएशन का एक प्रतिनिधिमंडल शीघ्र ही पलवल का दौरा करेगा। जिला इकाई द्वारा लोकतांत्रिक एवं वैधानिक रूप से लिए जाने वाले प्रत्येक निर्णय का संगठन पूर्ण समर्थन करेगा तथा पत्रकारों के सम्मान, सुरक्षा और अधिकारों की रक्षा के लिए हर स्तर पर मजबूती से उनके साथ खड़ा रहेगा। संगठन ने विश्वास व्यक्त किया कि मुख्यमंत्री, डीजीआईपीआर तथा संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों के संज्ञान में मामला आने के बाद पत्रकारों की शिकायतों पर न्यायोचित कार्रवाई होगी। साथ ही भविष्य में किसी भी पत्रकार के साथ इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए भी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। मीडिया वेल बीइंग एसोसिएशन ने स्पष्ट किया कि वह पत्रकारों के सम्मान, सुरक्षा और अधिकारों की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष करती रहेगी तथा किसी भी प्रकार के उत्पीड़न को किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं करेगी।

कांग्रेस हाईकमान द्वारा राजा वड़िंग को दोबारा पंजाब अध्यक्ष बनाए जाने का फैसला दलित समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला : जोगिंदर सिंह मान

चंडीगढ़। पूर्व मंत्री जोगिंदर सिंह मान ने पंजाब कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर बड़ा बयान देते हुए कहा है कि कांग्रेस हाईकमान द्वारा अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग को दोबारा पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाए जाने का फैसला दलित समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला है। उन्होंने आरोप लगाया कि इस निर्णय से कांग्रेस ने दलित समुदाय के जख्मों पर नमक छिड़कने का काम किया है। जोगिंदर सिंह मान ने कहा कि राजा वड़िंग द्वारा पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ दलित नेता सरदार बूटा सिंह के संबंध में की गई कथित अपमानजनक टिप्पणी को दलित समाज आज तक नहीं भूला है। उन्होंने कहा कि सरदार बूटा सिंह ने देश और समाज की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया था और उनके प्रति की गई किसी भी तरह की टिप्पणी दलित समुदाय की भावनाओं को आहत करती है। पूर्व मंत्री ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व को यह स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वह ऐसे बयानों से सहमत है। उन्होंने कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और सांसद चरणजीत सिंह चन्नी, सांसद सुखजिंदर सिंह रंधावा तथा नेता प्रतिपक्ष प्रताप सिंह बाजवा से इस मुद्दे पर अपना रुख सार्वजनिक रूप से स्पष्ट करने की मांग की। मान ने कहा कि पंजाब के दलित समाज को यह जानने का अधिकार है कि कांग्रेस के बड़े नेता राजा वड़िंग की उस टिप्पणी पर क्या सोच रखते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस दलित हितैषी होने का दावा करती है, लेकिन उसके फैसले कुछ और ही कहानी बयां कर रहे हैं। मान ने कहा कि यदि कांग्रेस वास्तव में दलित समाज का सम्मान करती है तो उसे इस मामले पर अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए और दलित समुदाय की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। जोगिंदर सिंह मान के इस बयान के बाद पंजाब की सियासत में एक बार फिर दलित राजनीति और कांग्रेस नेतृत्व को लेकर बहस तेज होने की संभावना है।

पाकिस्तान में ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा साहिब के साथ की गई तोड़फोड़ अत्यंत निंदनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण : विजय सांपला

होशियारपुर। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता विजय सांपला ने पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मंडी चूहड़काणा (फारूकाबाद) स्थित लगभग 125 वर्ष पुराने ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा साहिब के साथ की गई तोड़फोड़ की घटना की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि यह केवल एक ऐतिहासिक धार्मिक स्थल पर हमला नहीं, बल्कि सिख समुदाय की आस्था, इतिहास और अमूल्य विरासत पर सीधा प्रहार है। सांपला ने कहा कि पाकिस्तान में सिखों सहित अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा और धार्मिक स्वतंत्रता को लेकर लंबे समय से गंभीर चिंताएँ व्यक्त की जाती रही हैं। समय–समय पर मंदिरों और गुरुद्वारों पर हमलों, धार्मिक स्थलों पर अवैध कब्जों, अल्पसंख्यक समुदायों के साथ भेदभाव तथा हिंदू और सिख समुदायों से संबंधित महिलाओं एवं नाबालिग लड़कियों के कथित जबरन धर्म परिवर्तन और विवाह जैसी घटनाओं की रिपोर्टें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी लगातार चिंता का विषय रही हैं। ये घटनाएँ इस बात का संकेत देती हैं कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों तथा उनकी धार्मिक विरासत की प्रभावी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। यदि ऐतिहासिक और पवित्र धार्मिक स्थल भी सुरक्षित नहीं रह सकते, तो यह धार्मिक स्वतंत्रता, कानून के शासन और अल्पसंख्यक समुदायों के संवैधानिक अधिकारों पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान पाकिस्तान में अनेक मंदिरों, गुरुद्वारों और अन्य धार्मिक स्थलों से जुड़े विवादों तथा अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा को लेकर लगातार प्रश्न उठते रहे हैं। ऐसे हालात में पाकिस्तान सरकार की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वह केवल आश्वासनों तक सीमित न रहे, बल्कि दोषियों के विरुद्ध कठोर एवं उदाहरणात्मक कार्रवाई कर यह विश्वास बहाल करे कि प्रत्येक धार्मिक स्थल और प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा उसके लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मेरे मां-बाप ने मुझे झूठ बोलना नहीं सिखाया, अगर सिखाया होता तो आज बहुत बड़ा लीडर होता : अनिल विज

चंडीगढ। हरियाणा के परिवहन, ऊर्जा एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने शुक्रवार को एक बार फिर अपने बेबाक, स्पष्टवादी और जनसंपर्क के अनोखे अंदाज से सबको चौंका दिया। उस समय हजारों बिजली कर्मचारी अपनी विभिन्न मांगों को लेकर उनके आवास का घेराव करने के लिए अंबाला कैंट की ओर बढ़ रहे थे। कर्मचारी सरकार और मंत्री के खिलाफ जोरदार नारेबाजी कर रहे थे। इसी बीच अनिल विज अपने भाई राजेंद्र विज को हृदय संबंधी परेशानी के चलते पीजीआई में भर्ती कराने गए हुए थे। शुक्रवार सुबह अचानक तबीयत बिगड़ने पर उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया गया था। जैसे ही विज को सूचना मिली कि बिजली कर्मचारी उनके आवास की ओर कूच कर रहे हैं और उनके खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं, उन्होंने अपने भाई को अस्पताल में छोड़कर तत्काल अंबाला कैंट लौटने का निर्णय लिया। सुरक्षा अधिकारियों ने उन्हें प्रदर्शनकारियों की भीड़ में जाने से रोकने का प्रयास किया। उनका मानना था कि विरोध का माहौल है और इतनी बड़ी भीड़ के बीच जाना जोखिम भरा हो सकता है। लेकिन विज ने सुरक्षा कर्मियों की एक नहीं सुनी और कहा, "मैं पब्लिक का बंदा हूं, यह मेरी पब्लिक है।" इसके बाद उन्होंने अपनी गाड़ी बीच रास्ते में रुकवाई और पैदल ही हजारों आंदोलनकारी कर्मचारियों के बीच पहुंच गए। जैसे ही अनिल विज प्रदर्शनकारियों के बीच पहुंचे, कुछ क्षणों के लिए पूरा माहौल शांत हो गया। विरोध के स्वर थम गए और वहां सन्नाटा छा गया। विज ने कर्मचारियों से कहा "अब भी लगाओ मुर्दाबाद के नारे। मैंने सारी जिंदगी ऐसे ही काटी है। मेरे मां–बाप ने मुझे कभी झूठ बोलना नहीं सिखाया।

अगर उन्होंने मुझे झूठ बोलना सिखाया होता तो आज मैं बहुत बड़ा लीडर होता।" इसके बाद उन्होंने भावुक अंदाज में कहाकृ "मैं अपने भाई को पीजीआई में भर्ती करवाकर आया हूं, क्योंकि वह भी मेरा भाई है। लेकिन आप भी मेरे भाई हैं। इसलिए मैं आपके बीच आया हूं।" उन्होंने आगे कहा कि, "भाई की हालत देखते हुए मुझे पीजीआई से नहीं आना चाहिए था, लेकिन आप लोग भी किसी उम्मीद से आए हैं। मैं सबकी सुनता हूं। पिछले दिनों भी आपके कुछ साथी मुझसे मिले थे, उनकी बात भी मैंने सुनी थी।" अनिल विज ने कर्मचारियों को भरोसा दिलाया कि उनके बड़े भाई के स्वास्थ्य में सुधार होने

और सर्जरी पूरी होने के बाद, लगभग 15द्ध20 दिनों के भीतर वह स्वयं कर्मचारियों को पत्र भेजकर बातचीत के लिए बुलाएंगे। उन्होंने कहा कि विभाग के सभी वरिष्ठ अधिकारियों को सामने बैठाकर मांगपत्र के प्रत्येक बिंदु पर खुली चर्चा की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "जो भी संभव होगा, वह ढंके की चोट पर करेंगे। रिस्क अलाउंस के विषय में भी मैं अधिकारियों को पहले ही निर्देश दे चुका हूं।" विज की साफगोई और सहज व्यवहार ने देखते ही देखते पूरे माहौल को बदल दिया। कुछ ही मिनट पहले तक जो कर्मचारी "अनिल विज मुर्दाबाद" के नारे लगा रहे थे, वही "अनिल विज जिंदाबाद" के नारे लगाने लगे। विरोध का वातावरण संवाद और विश्वास में बदल गया। अनिल विज का यह 'गब्बर स्टाइल' देखकर वहां मौजूद लोग भी हैरान रह गए। जिस स्थान पर भारी विरोध, नारेबाजी और तनावपूर्ण माहौल हो, वहां किसी मंत्री का सुरक्षा घेरे की परवाह किए बिना पैदल प्रदर्शनकारियों के बीच पहुंच जाना किसी बड़े जोखिम से कम नहीं था। लेकिन विज ने खतरे की परवाह नहीं की और सीधे कर्मचारियों के बीच जाकर संवाद का रास्ता चुना। शुक्रवार का यह घटनाक्रम हरियाणा की राजनीति में लंबे समय तक चर्चा का विषय रहेगा। एक ओर मंत्री अपने बीमार भाई की चिंता में पीजीआई पहुंचे थे, वहीं दूसरी ओर हजारों नाराज कर्मचारियों के बीच जाकर उन्होंने संवाद, स्पष्टवादिता और भरोसे के बल पर विरोध का माहौल बदल दिया। यह दृश्य अनिल विज की उस राजनीतिक कार्यशैली का उदाहरण बन गया, जिसमें वे टकराव से बचने के बजाय सीधे लोगों के बीच जाकर बात करना अधिक उचित मानते हैं। बेशक इस भीड़ की पटकथा अनिल विज या उनकी सरकार के विरोधियों ने लिखी हो लेकिन अनिल विज तो अनिल विज हैं। जब हजारों की संख्या में कर्मचारी उनके निवास के बाहर बैठने और नारेबाजी करने की सूचना अनिल विज के कानों में पड़ी तो फिर अनिल विज से रहा ना गया। हालांकि वह समय उनके लिए धर्म संकट से भरा था। वह अपने भाई राजेंद्र विज जी की बाईपास सर्जरी के लिए उन्हें पीजीआई भर्ती करवाने के लिए गए हुए थे। लेकिन यह परिस्थितियां भी उन्हें संभालनी थी, सरकार की साख बचाना भी एक प्राथमिकता थी। उन्होंने मौके पर स्वयं जाने के लिए ड्राइवर को बोला तो सिक्योरिटी टीम सकते में आ गई और उन्होंने अनिल विज को रोकने के लाख प्रयास किए। लेकिन अनिल विज ने कहा कि जो नाराज हैं वह भी मेरे भाई हैं। इस भाई को मैं आकर संभाल लूंगा, इतनी चिलचिलाती धूप में खड़े अपने भाइयों को पहले संभाल लूं।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

सीएम माझी ने 600 करोड़ रुपये की 109 परियोजनाओं का शुभारंभ किया

बरहामपुर ११/०८ (संवाददाता):: मुज़्यमंत्री मोहन चरण माझी ने सोमवार को रायगड़ा जिले के लिए 600 करोड़ रुपये से ज़्यादा की 109 परियोजनाओं का उद्घाटन किया।रायगड़ा शहर में सुभद्रा शक्ति मेले में शामिल होते हुए, माझी ने 238 करोड़ रुपये से ज़्यादा की 22 परियोजनाओं का उद्घाटन किया और 366 करोड़ रुपये से ज़्यादा की 87 अन्य परियोजनाओं की आधारशिला रखी। इन परियोजनाओं में सड़कें, पुल, स्वास्थ्य सेवा, स्कूल और महिला सशक्तिकरण जैसी बुनियादी ढांचा विकास के काम शामिल हैं। सभा को संबोधित करते हुए, माझी ने कहा कि जिले के विधायकों और स्थानीय नेताओं की मांगों के अनुसार, रायगड़ा के सभी ज़्लॉकों में जल्द ही इंडोर स्टेडियम पर काम शुरू होगा। शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन

प्रणालियों को मजबूत किया जाएगा, जबकि रायगड़ा में एक मेडिकल कॉलेज स्थापित करने का प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है।मुज़्यमंत्री ने कहा कि आने वाले दिनों में, हिंडाल्को 15,000 करोड़ रुपये के निवेश के साथ रायगड़ा में अपने परिचालन का विस्तार करने जा रहा है। जिले में वेदांता एल्युमिना रिफाइनरी और उत्कल एल्युमिना इंटरनेशनल जैसी कई परियोजनाएं स्थापित की जाएंगी। इसके अलावा, रायगड़ा में अन्य क्षेत्रों में और भी उद्योग आएंगे। इन उद्योगों के माध्यम से पर्याप्त रोजगार के अवसर पैदा होंगे। उन्होंने कहा कि इन उद्योगों में 80 प्रतिशत नौकरियां स्थानीय युवाओं के लिए आरक्षित करने के सज़्त निर्देश दिए गए हैं।उन्होंने आगे कहा कि रायगड़ा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में पूरे राज्य के लिए एक उदाहरण बन गया है। जिले में 1.52 लाख से ज़्यादा माताएं और बेटियां 12,783 स॥त्त के माध्यम से संगठित हैं और अपने लिए एक उज्ज्वल भविष्य बना रही हैं।

हाईकोर्ट ने कॉन्ट्रैज़्ट को लेकर राज्य सरकार को फटकार लगाई

कटक ११/०८ (संवाददाता):ओडिशा हाई कोर्ट ने शिवांगी महतो द्वारा दायर एक रिट अपील को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने स्च्ष्टत्त मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल, बेरहामपुर में असिस्टेंट प्रोफेसर (एनेस्थिसियोलॉजी) के पद पर नियुक्ति के लिए अपने दावे को खारिज किए जाने को चुनौती दी थी। कोर्ट ने नियमित भर्ती नियमों से हटकर सरकारी नौकरियों में कॉन्ट्रैज़्ट पर नियुक्तियों की प्रथा की कड़ी निंदा की। जस्टिस दीक्षित कृष्ण श्रीपाद और जस्टिस चिज़्रंजन डैश की डिवीजन बेंच ने रजिस्ट्री को फैसले की कॉपी ओडिशा के मुज़्य सचिव और ओडिशा लोक सेवा आयोग के सचिव को भेजने का निर्देश दिया, और नियमित भर्ती प्रक्रिया शुरू करने के लिए तुरंत कार्रवाई करने का आग्रह किया। जिसने स्च्ष्टत्त मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल द्वारा कॉन्ट्रैज़्ट के आधार पर पद भरने के लिए 5 नवंबर, 2024 को जारी विज्ञापन के खिलाफ महतो की याचिका को खारिज कर दिया था।

राउरकेला इस्पात संयंत्र द्वारा कर्मचारियों को 'आरएसपी गौरव' पुरस्कार प्रदान

राउरकेला ११/०८ (संवाददाता):राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) द्वारा 26 जनवरी 2026 को इस्पात स्टेडियम में आयोजित भव्य गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर आरएसपी गौरव पुरस्कार आरएसपी के निदेशक प्रभारी, श्री आलोक वर्मा द्वारा 3 गैर-कार्यपालकों तथा 3 कार्यपालकों को प्रदान किए गए।

गैर-कार्यपालक वर्ग में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वालों में क्रमशः अभियांत्रिकी सहायक (कोक ओवन), श्री पुरुषोज़म मेहर, श्री केदार नाथ हुई, कनिष्ठ अभियंता (सिलिकॉन स्टील मिल) तथा कनिष्ठ अभियंता (कोल केमिकल्स), श्री भागीरथी जेना शामिल थे।कार्यपालक वर्ग में वरिष्ठ प्रबंधक (आर एंड सी प्रयोगशाला), सुश्री खुशबू मिश्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान वरिष्ठ प्रबंधक (कॉन्ट्रैज़्ट सेल), सुश्री कविता बिसोई तथा तृतीय स्थान सहायक प्रबंधक (सुरक्षा अभियांत्रिकी), सुश्री प्रज्ञाँ पी नाथ को प्राप्त हुआ।

उल्लेखनीय है कि, 'मेरी आरएसपी- मेरा पहचान' (माई आरएसपीङ्कमाई आइडेंटिटी) एक अनूठी पहल है, जो कर्मचारियों को संगठन का हिस्सा होने के अपने सकारात्मक विचार, भावनाएँ और अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस पहल के अंतर्गत कर्मचारियों को 15 दिनों की अवधि में प्रतिदिन आरएसपी के बारे में कम से कम एक पूर्ण वाज़्य में सकारात्मक विचार लिखना होता है।इस प्रतियोगिता के 7वें संस्करण की शुरुआत 1 जनवरी को हुई और यह 15 जनवरी 2026 तक चली, जिसमें कुल 2972 कर्मचारियों ने आरएसपी पोर्टल के 'एज़्प्लॉई ज़ोन' लिंक अथवा मोबाइल ऐप 'कर्मी-मित्र' के माध्यम से अपनी प्रविष्टियाँ दर्ज कीं।वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति ने ऑनलाइन माध्यम से प्रतिदिन के आधार पर प्रविष्टियों का मूल्यांकन कर अंक प्रदान किए।इस पहल का उद्देश्य कर्मचारियों का संगठन से जुड़ाव और मजबूत करना तथा उन्हें कंपनी के ब्रांड एंबेसडर के रूप में विकसित करना है।

चौद्वार जेल में एक कैदी मृत पाया गया, आत्महत्या का शक

कटक ११/०८ (संवाददाता): ओडिशा के कटक जिले की चौद्वार सर्कल जेल में संदिग्ध परिस्थितियों में एक कैदी मृत पाया गया, जिससे एक बार फिर सुधार गृह में कैदियों की सुरक्षा और निगरानी पर चिंताएं बढ़ गई हैं। मृतक की पहचान कटक के हातीपोखरी इलाके के रहने वाले एमडी कलीम के रूप में हुई है। जेल अधिकारियों के अनुसार, कलीम शाम करीब 6॰30 बजे जेल परिसर के अंदर एक तौलिए से लटका हुआ मिला। उसे तुरंत एससीबी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉज़्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

जेल के अंदर लटका हुआ मिला जेल अधिकारियों ने पहली नज़र में इस घटना को आत्महत्या का मामला बताया है। घटना की पुष्टि करते हुए, जेलों की डीआईजी (कटक रेंज) अनुसूया जेना ने कहा कि कैदी ने कथित तौर पर लॉक-अप के समय आत्महत्या कर ली।

हिंसक व्यवहार दिखाने के बाद मेडिकल सलाह पर कैदी को मनोरोग वार्ड में रखा

गया था। बताया जाता है कि उसने आत्महत्या करने के लिए अपने ही तौलिए का इस्तेमाल किया। जेल प्रशासन की ओर से कोई लापरवाही नहीं थी। माना जा रहा है कि उसने अपनी मानसिक स्थिति के कारण यह कदम उठाया, उन्होंने कहा।

मनोरोग वार्ड में भर्ती अधिकारियों ने बताया कि कलीम दिसंबर से चौद्वार सर्कल जेल में बंद था। मेडिकल जांच के बाद, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के कारण उसे मनोरोग वार्ड में रखा गया था। सूत्रों ने बताया कि उसे पहले हत्या के प्रयास के एक मामले में गिरज़्तार किया गया था और मानसिक रूप से अस्थिर घोषित किए जाने के बाद उसे चौद्वार जेल में ट्रांसफर कर दिया गया था।

घटना के बाद, चौद्वार पुलिस स्टेशन के अधिकारियों ने कटक जोन ढ्ढ के एसीपी के साथ जेल परिसर का दौरा किया और कैदी की मौत के सही कारणों का पता लगाने के लिए जांच शुरू की। इस घटना ने एक बार फिर चौद्वार सर्कल जेल को जांच के दायरे में ला दिया है। यह उसी जेल में एक और कैदी की मौत के ठीक बाद हुआ है, जिसमें खुर्दा जिले के बोलागढ़ इलाके का एक कैदी शामिल था। उस मामले में पोस्टमार्टम रिपोर्ट का अभी भी इंतजार है। बार-बार कैदियों की मौत ने निगरानी, सुरक्षा उपायों और निगरानी तंत्र पर गंभीर सवाल उठाए हैं, खासकर मनोरोग वार्ड में रखे गए कैदियों के लिए। हाल के महीनों में, जेल में कैदियों के बीच झड़प, कथित सुरक्षा चूक और जेल अधिकारियों से जुड़े विवादों की घटनाएं भी देखी गई हैं, जिसमें कैदियों के भागने की घटनाओं को लेकर शिकायतें भी शामिल हैं। इस बीच, मृतक कैदी के परिवार ने आरोप लगाया है कि उसकी हत्या की गई है और उसकी मौत को आत्महत्या का रूप दिया जा रहा है। उन्होंने इस मामले की गहन जांच की मांग की है।

बिजनेसमैन से 6.16 करोड़ रुपये की ठगी करने के आरोप में एक व्यक्ति गिरफ्तार

कटक ११/०८ (संवाददाता): क्राइम ब्रांच की साइबर क्राइम यूनिट ने सोमवार को आंध्र प्रदेश के एक व्यक्ति को एक नकली ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के ज़रिए बेरहामपुर के एक बिजनेसमैन से 6.16 करोड़ रुपये से ज़्यादा की धोखाधड़ी के आरोप में गिरज़्तार किया।

आरोपी की पहचान वेदगिरी श्रीनिवासराव (39) के रूप में हुई है, जो आंध्र प्रदेश के गुंटूर का रहने वाला है। उसे बेरहामपुर की स्ष्ठद्ब्रू कोर्ट में पेश किया गया। पिछले साल इस मामले में एक महिला सहित छह लोगों को गिरज़्तार किया गया था।

साइबर क्राइम पुलिस ने पिछले साल जुलाई में बिजनेसमैन की शिकायत के बाद मामला दर्ज किया था, जिसमें उसने आरोप लगाया था कि कुछ धोखेबाजों ने उससे 6.16 करोड़ रुपये से ज़्यादा की ठगी की है।शिकायतकर्ता के अनुसार, संजना श्रीनिवासन नाम की एक महिला ने फेसबुक के ज़रिए उससे संपर्क किया, खुद को ढ्ढक्क्रू हांगकांग में सॉज़्टवेयर डेवलपर बताया और उससे व्हाट्सएप पर बात करने का अनुरोध किया।

शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया, महिला ने बताया कि उसकी ढ्ढक्क्रू टीम ''ढ्ढस्न में डिजिटल करेंसी एज़्सचेंज के लिए एक डेटा सेंटर बना रही है और उसने मुझे ''ढ्ढस्न के साथ एक ट्रेडिंग अकाउंट खोलने और ट्रेडिंग करने के लिए मनाया।

इसके अनुसार, पिछले साल 23 मई से 24 जून के बीच, उसने उसके निर्देशानुसार अलग-अलग खातों में 6,16,37,084 रुपये ट्रांसफर किए। 30 मई को, उसके ट्रेडिंग अकाउंट में स्ष्ठज्ञ 11,292 का नेगेटिव बैलेंस दिखा। जब उसने यह बात संजना को बताई, तो उसने उसे नुकसान की भरपाई के लिए और पैसे लगाने की सलाह दी। इसके बाद उसने ट्रेडिंग जारी रखी और कथित तौर पर उसके अकाउंट में काफी मुनाफा दिखा।

पुरी में अस्तारंगा तट से 10 फुट के मगरमच्छ को सुरक्षित बचाया गया

पुरी ११/०८ (संवाददाता):पुरी ज़िले में अस्तारंगा तट पर दिखे एक बहुत बड़े मगरमच्छ को वन विभाग ने सफलतापूर्वक बचा लिया, जिससे स्थानीय लोगों और पर्यटकों को राहत मिली। तटरेखा पर इस विशाल सरीसृप को देखने के बाद आस-पास के तटीय गांवों में रहने वाले

लोगों के साथ-साथ इलाके में आने वाले पर्यटकों में भी डर का माहौल बन गया था।

घटना के बाद, अस्तारंगा वन रेंज के अधिकारियों ने तुरंत पर्यटकों को चेतावनी जारी की और किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए तट पर गश्त बढ़ा दी।

लोगों की सुरक्षा को देखते हुए, मगरमच्छ का पता लगाने और उसे पकड़ने के लिए एक विशेष बचाव अभियान शुरू किया गया।

लगातार दो दिनों तक, राजनगर रैपिड रिस्पांस टीम और अस्तारंगा वन रेंज के अधिकारियों की एक संयुक्त टीम ने समुद्री रास्तों से मगरमच्छ की गतिविधियों पर बारीकी से नज़र रखी। टीम लगातार अलर्ट पर रही और सरीसृप पर नज़र रखती रही ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसे लोगों या जानवर को नुकसान पहुंचाए बिना बचाया जा सके।

बचाव अभियान कल पीर जहानिया समुद्र तट के पास सफलतापूर्वक चलाया गया। जाल का इस्तेमाल करके, वन विभाग की टीम ने लगातार प्रयासों के बाद मगरमच्छ को सुरक्षित रूप से पकड़ लिया। बचाव के बाद, मगरमच्छ को भितरकनिका ले जाया गया, जहाँ वह एक उपयुक्त प्राकृतिक आवास में रहेगा।

वन अधिकारियों ने पुष्टि की कि मगरमच्छ की लंबाई 10 फीट 6 इंच है और यह खारे पानी की मगरमच्छ प्रजाति का है। वन विभाग की समय पर कार्रवाई से तटीय निवासियों में सुरक्षा की भावना बहाल हुई, साथ ही मगरमच्छ को सुरक्षित रूप से दूसरी जगह पहुँचाना भी सुनिश्चित हुआ।

आरएसपी में आपातकालीन प्रतिक्रिया और बचाव पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

राउरकेला ११/०८ (संवाददाता): दक्ष रक्षक पहल के तहत, राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) के लर्निंग एंड डेवलपमेंट (एल एंड डी) विभाग में आपातकालीन प्रतिक्रिया और बचाव (ईआरआर) पर 7 वां विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमअग्निशमन सेवा विभाग द्वारा आयोजित किया गया।

रक्षा करने के लिए प्रशिक्षित, प्रतिक्रिया करने के लिए तैयार विषय के तहत आयोजित, दो दिवसीय कार्यक्रम गैस लाइन रखरखाव, सीमित स्थानों और ऊंचाई से संबंधित काम से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों में लगे कर्मचारियों की आपातकालीन प्रतिक्रिया और बचाव क्षमताओं को बढ़ाने पर केंद्रित है। कार्यपालक, गैर-कार्यपालक और अनुबंध कर्मचारियों सहित कुल 50

कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षण में आग की रोकथाम और अग्निशमन के आवश्यक पहलुओं, गैस लाइन रखरखाव से जुड़े ख़तरों, सीमित-अंतरिक्ष संचालन और ऊंचाई पर काम करने से जुड़े खतरों के साथ-साथ कार्बन मोनोऑज़्साइड, ऑज़्सीजन और विस्फोटक गैस मॉनीटर सहित स्व-निहित श्वास उपकरण (एससीबीए), एयरलाइन उपकरण और गैस मॉनीटर के उपयोग को शामिल किया गया।

प्रतिभागियों ने प्राथमिक चिकित्सा अग्निशमन उपकरण, फायर हाइड्रेंट, फायर होसेस और नोज़ल के उपयोग में व्यापक प्रैज़्टिकल प्रशिक्षण भी लिया। कार्डियोपल्मोनरी पुनर्जीवन (सीपीआर), पीड़ित को संभालने के तरीकों, स्ट्रेचर हैंडलिंग, रस्सी और बचाव तकनीकों, सीढ़ी संचालन, डमी बचाव और ऊंचाई से बचाव पर व्यावहारिक सत्र भी आयोजित किए गए थे।

इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को आरएसपी में ऑन-साइट आपातकालीन प्रबंधन प्रणाली और मॉक ड्रिल प्रक्रियाओं से परिचित कराया।

समापन सत्र में एक अग्नि सुरक्षा प्रश्नोज़्ारी, प्रतिक्रिया और प्रतिभागियों के साथ एक इंटरैज़्टिव सत्र शामिल था।

इस सत्र के दौरान महाप्रबंधक (अग्निशमन सेवाएँ), श्री पी. एस. ठाकरे और सहायक महाप्रबंधक (मानव संसाधन- ज्ञानार्जन एवं बिकास), सुश्री सुश्रीता दास मौजूद थे। कार्यक्रम का समन्वय उप प्रबंधक (अग्नि सेवा), श्री एस. बी. साहू ने किया।